

शिक्षा निदेशालय
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

सहायक सामग्री (2016–2017)

कक्षा—गयारहवीं
समाजशास्त्र

मार्गदर्शनः
श्रीमती पुण्य सलिला श्रीवास्तव
सचिव (शिक्षा)

श्रीमती सौम्या गुप्ता
निदेशक (शिक्षा)

डॉ. सुनीता शुक्ला कौशिक
अतिरिक्त शिक्षा निदेशक (स्कूल एंव परीक्षा)

समन्वयः

श्रीमती सविता दराल श्रीमती शारदा तनेजा डॉ. सतीश कुमार
उप शिक्षा निदेशक (परीक्षा) विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा) विशेष कार्याधिकारी (परीक्षा)

**SUPPORT MATERIAL
2016-2017**

**CLASS-XI
SUBJECT : SOCIOLOGY**

Reviewed by

Name of the Team Leader	Ms. Karuna Verma Vice Principal, KIIT World School Pitam Pura, Delhi - 110034
Name of the Experts	Ms. Sheetal Soni Lecture Sociology KIIT World School Pitam pura, Delhi - 110034 Ms. Gunjan Gupta Lecturer Sociology D.L.DAV Model School Shalimar Bagh Delhi - 110088 Ms Isha Mutreja Lecturer Sociology Mata Sukhdevi School Delhi - 110036 Ms. Santosh Chaudhary Lecturer Sociology Bharat National Public School Ram vihar, Delhi - 110092 Ms. Bhushan Tondan Lecturer Sociology SKV No 2, A Block, Jahangir Puri Delhi Ms. Nirmal Sharma Lecturer Sociology GSKV Avantika, Sector 1, Rohini Delhi
Proof Reading English Version Hindi Version	Ms Sheetai Soni Ms Nirmal Sharma

Course Structure

Theory Paper

First term (SA-I) 50 Marks
Second Term (SA-II) 80 Marks

(Weightage 50% = 25 Marks)
(Weightage 44% = 55 Marks)

(Weightage 100% = 20 Marks)

Practical Examination 20 Marks

Total = 100 Marks

A. Book One (Introducing Sociology)

- | | |
|-------------------------------------------------------------------|------------------------------------|
| 1. Society, Sociology and relationship with other social sciences | 6 Marks |
| 2. Basic Concepts | 8 Marks |
| 3. Social Institutions | 10 Marks |
| 4. Culture and Society | 10 Marks |
| 5. Practical Sociology : Methods & Techniques: | Evaluated through Practical |

B. Book Two (Understanding Society)

- | | |
|------------------------------------------|-----------------|
| 1. Structure, Process and Stratification | 10 Marks |
| 2. Social Change | 10 Marks |
| 3. Environment and Society | 10 Marks |
| 4. Western Social Thinkers | 8 Marks |
| 5. Indian Sociologists | 8 Marks |

Practical Examination

- | | |
|-------------------------------------------------------------------------|-----------------|
| A. Project (undertaken during the academic year at school level) | 10 Marks |
| 1. Statement of the purpose | 2 Marks |
| 2. Methodology/Technique | 2 Marks |
| 3. Conclusion | 3 Marks |
| B. Viva – based on the project work | 2 Marks |
| C. Research design | 8 Marks |
| 1. Overall format | 1 Marks |
| 2. Research Question/Hypothesis | 1 Marks |
| 3. Choice of technique | 2 Marks |
| 4. Detailed procedure of implementation of technique | 2 Marks |
| 5. Limitation of the above technique | 2 Marks |

MONTHLY SYLLABUS
SESSION-2016-17
CLASS-XI
SUBJECT-SOCIOLOGY

माह	विषयवस्तु
जुलाई 2016	<p>इकाई—1, अध्याय—1 : समाजशास्त्र एंव समाज समाजशास्त्र का अर्थ समाज का परिचय, समाजशास्त्रीय कल्पनाएँ, व्यक्तिगत समस्याएँ एंव जनहित के मुद्दे, समाजों में बहुलताएँ एंव असमानताएँ, बौद्धिक विचार, भौतिक मुद्दे, यूरोप में समाजशास्त्र का आरम्भ, भारत में समाजशास्त्र का विकास, समाजशास्त्र का अन्य विज्ञानों से सम्बन्ध : समाजशास्त्र व अर्थशास्त्र, राजनिति विज्ञान, इतिहास मनोविज्ञान तथा मानव विज्ञान का सम्बन्ध</p> <p>अध्याय—2 : समाजशास्त्र में प्रयुक्त शब्दावली, संकल्पनाएँ एंव उनका उपयोग सामाजिक समूह एंव समाज, समूहों के प्रकार, प्राथमिक तथा द्वितीयक समूह, समुदाय एंव समाज अथवा संघ, अतः समूह एंव बाह्य समूह, संदर्भ, समवाचक समूह, समाजिक स्तरीकरण, जाति, वर्ग प्रस्थिसति और भूमिका नियन्त्रण, सामाजिक नियन्त्रण, सामाजिक विचलन</p> <p>अध्याय—3 : सामाजिक संस्थाओं को समझना संस्था का अर्थ औपचारिक एंव अनौपचारिक संस्थाएँ परिवार के स्वरूप परिवार किस तरह लिंगवादी हैं? विवाह—संस्था—अर्थ, विवाह के रूप, विवाह के नियम, अन्तर्विवाह और बहिर्विवाह, नातेदारी—अर्थ नातेवादी के प्रकार, सक्तमूलक, विवाह मूलक।</p> <p>इकाई—1, अध्याय—3 कार्य, कार्य व आर्थिक जीवन, कार्य के आधुनिक रूप और श्रम विभाजन, कार्य रूपांतरण, राजनीतिक सत्ता, राज्यविहीन समाज, राज्य की संकल्पना, धर्म—अर्थ, विशेषताएँ, शिक्षा।</p> <p>अध्याय—4 : संस्कृति तथा सामाजिकरण संस्कृति का अर्थ, परिभाषा संस्कृति के प्रकार, संस्कृति के आयाम : संज्ञानात्मक, मानकीय भौतिक, संस्कृति, संस्कृति तथा पहचान, नृजातीयता, सांस्कृति परिवर्तन, समाजीकरण के साधन : परिवार, समकक्ष समूह विद्यालय, जनमाध्यम, अन्य समाजीकरण अभिकरण।</p> <p>प्रोजेक्ट कार्य</p>
अगस्त 2016	<p>इकाई—2 अध्याय 1 : समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ सामाजिक संरचना, सामाजिक स्तरीकरण, वर्ग, वर्गा, लिंग, सहयोग तथा श्रम विभाजन प्रतियोगिता अवधारणा एंव व्यवहार के रूप में। संघर्ष तथा सहयोग।</p>
सितम्बर 2016	

S.A. I

अक्टूबर 2016

इकाई—2, अध्याय—2 : ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन तथा सामाजिक व्यवस्था

सामाजिक परिवर्तन कारक व स्त्रोत, सोशल डार्विनिज्म, पर्यावरण, तकनीकी तथा अर्थव्यवस्था, राजनीति, संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था, प्रभाव, सत्ता तथा कानून, संघर्ष, अपराध तथा हिंसा, गाँव, कस्बों और नगरों में सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक परिवर्तन, ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक व्यवस्था तथा सामाजिक तथा सामाजिक परिवर्तन, नगरीक व्यवस्था तथा सामाजिक परिवर्तन।

शरदकालीन अवकाश

नवम्बर 2016

इकाई—2, अध्याय—3 : पर्यायवरण और समाज

सामाजिक पारिस्थितिकी, सामाजिक पर्यायवरण तथा समाज के सम्बन्ध, पर्यायवरण की प्रमुख समस्याएँ और जोगिम—संसाधनों की श्रीणता प्रदूषण — वायु, ध्वनि, जल प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग, जैविक, रूपांतरित खेती, पर्यायवरण की समस्याएँ, पर्यायवरण असन्तुलन, पर्यायवरण संकट पर्यायवरणीय प्रक्रियाएँ, पर्यायवरण संकट से उबरने के उपाय

अध्याय—4 : पाश्चात्य सामाजशास्त्री—एक परिचय

समाजशास्त्र का संदर्भ ज्ञानयोदय, फ्रांसिसी क्रान्ति, औद्योगिक क्रान्ति, कार्ल—मार्क्स — वर्ग संघर्ष का सिद्धान्त, अलगाव का सिद्धान्त, एमिल दुर्खाइम — सामाजिक तथ्य, श्रम विभाजन, सामूहिक चेतना मैक्स वैबर — सामाजिक क्रिया, सत्ता व सत्ता के प्रारूप, नौकरशाही वर्ग

दिसम्बर 2016

इकाई—1, अध्याय—5 : समाजशास्त्र — अनुसंधान पद्धतियाँ

शोध पद्धतियों का अभिप्राय, निरीक्षण कार्य पद्धति सर्वेक्षण, चरण व प्रकार, उद्योग्यए, सीमाएँ, साक्षात्कार उद्योग्य प्रकार महत्व।

Yuva Session : सभी को जीने का अधिकार — कन्या भ्रूण हत्या

इकाई—2, अध्याय—5 : भारतीय समाजशास्त्री

भारत के समाजशास्त्र का प्रारम्भ, अनन्तकृष्ण अच्यर, शरतचन्द्र राय, गोविन्द सदाशिव घूर्णे : जाति प्रजाति, जनजातियाँ, जाति व उपजाति।

शीतकालीन अवकाश

जनवरी 2017

इकाई—2, अध्याय—5 : धुजटि प्रसाद सुखर्जी — परम्परा व परिवर्तन अक्षम रमनलाल देसाई — राज्य व कल्याणकारी राज्य

एम.एन. श्रीनिवास — भारतीय गाँव

फरवरी 2017

पुनरावृत्ति :इकाई—2 : अध्याय—1, 2, 3, 4, 5

इकाई—1 : अध्याय—1, 2, 3, 4

S.A. II

QUESTION PAPER DESIGN 2016 - 17							
SOCIOLOGY		Code No. 039			CLASS-XI		
TIME: 3 Hours		Max. Marks: 80					
S.No	Typology of Questions	Learning outcomes and Testing Competencies	Very short Answer (VSA) (2 Marks)	Short Answer (SA) (4 Marks)	Long Answer (LA) (6 Marks)	Total Marks	% Weightage
1	Remembering- (knowledge based sample recall questions, to know specific facts, terms, theories, Identify, define, or recite, information)	Reasoning Analytical Skills Critical Thinking Skills etc.	5	2	1	24	30%
2	Understanding- (Comprehension - to be familiar with meaning and to understand conceptually, interpret, compare contrast, explain, paraphrase, or interpret information)		3	1	1	16	20%
3	Application (Use abstract information in concrete situation, to apply knowledge to new situations. Use given content to interpret a situation, provide an example, or solve a problem)		3	2	1	20	25%
4	Higher Order Thinking Skills (Analysis & Synthesis- Classify, compare, contrast, or differentiate pieces of information, organize and/or integrate unique pieces of information from a variety of sources)		1	1	1	12	15%
5	Evaluation - (Appraise, judge, and/or justify the value or worth of a decision or outcome, or to predict outcomes based on values)		2	1	-	08	10%
TOTAL			14X2=28	7X4=28	4X6=24	80(25)	100%

अध्याय-1

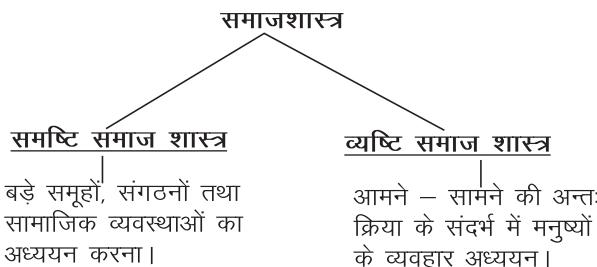
समाजशास्त्र एंव समाज

स्मरणीय बिन्दु :

- समाज : समाज, सामाजिक संबंधों का जाल है।
- समाज की प्रमुख विशेषताएँ :
 - (1) समाज अमूर्त है
 - (2) समाज में समानता व भिन्नता
 - (3) पारस्पारिक सहयोग एंव संघर्ष
 - (4) आश्रित रहने का नियम
 - (5) समाज परिवर्तनशील है
- व्यक्ति और समाज में संबंध / मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है:
 - (1) मनुष्य के क्रियाकलाप समाज से संबंधित हैं और समाज पर ही उसका अस्तित्व और विकास निर्भर करता है।
 - (2) मानव शरीर को सामाजिक विशेषताओं या गुणों से व्यक्तित्व प्रदान करना समाज का ही काम है।
 - (3) इस दृष्टि से व्यक्ति समाज पर अत्याधिक निर्भर है।
 - (4) व्यक्तियों के बिना सामाजिक संबंधोंकी व्यवस्था नहीं पनप सकती और न ही सामाजिक संबंधों की व्यवस्था के बिना समाज का अस्तित्व संभव है।
- समाजों में बहुलताएँ एंव असमानताएँ
 - (1) एक समाज दूसरे समाज से भिन्न होता है।
 - (2) हम एक से अधिक समाज के सदस्य बनते जा रहे हैं।
 - (3) दूसरे समाजों से अंतः क्रिया करते हैं, उनकी संस्कृति को ग्रहण करते हैं।
 - (4) इस प्रकार आज हमारी संस्कृति एक मिश्रित संस्कृति तथा हमारा समाज एक बहुलवादी समाज (एक से ज्यादा समाज) में परिवर्तित होता जा रहा है।
 - (5) हमारे समाज में असमानता समाजों के बीच केन्द्रिय बिंदु है।

उदाहरण : अमीर व गरीब

समाजशास्त्र : सामाजिक संबंधों का व्यवस्थित व क्रमबद्ध तरीके से अध्ययन करने वाला विज्ञान ही समाजशास्त्र है।



- **समाजशास्त्र की उत्पत्ति :**

- (1) समाजशास्त्र का जन्म 19वीं शताब्दी में हुआ।
- (2) समूह के क्रिया – कलापों में भाग लेने के लिए आवश्यक है कि समस्याओं को सुलझाया जाए। इन्हीं प्रयत्नों के परिणामस्वरूप ही समाजशास्त्र की उत्पत्ति हुई है।
- (3) 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में फ्रांस के विचारक अगस्त कॉम्ट ने समाजशास्त्र का नाम सामाजिक भौतिकी रखा और 1838 में बदलकर समाजशास्त्र रखा। इस कारण से कॉम्ट को “समाजशास्त्र का जनक” कहा जाता है।
- (4) समाजशास्त्र को एक विषय के रूप में विकसित करने में दुर्खीम, स्पेंसर तथा मैक्स वेबर आदि विद्वानों के विचारों का काफी रहा है।
- (5) भारत में समाजशास्त्र के उद्भव का विकास का इतिहास प्राचीन है।

- **भारत में समाजशास्त्र के अध्ययन के अध्ययन की आवश्यकता :**

- (1) भारत में व्याप्त क्षेत्रवाद, भाषावाद, सम्प्रदासवाद, जातिवाद आदि समस्याओं को व्यवस्थित ढंग से सुलझाने के लिए समाजशास्त्रीय अध्ययन आवश्यक है।
- (2) इसी कारण, भारत में विभिन्न समस्याओं के समाधान हेतु समाजशास्त्र का अध्ययन अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है।
- (3) दूसरे समाजों के साथ तुलनात्मक अध्ययन होता है
- (4) सामाजिक गतिशीलता के बारे में पता चलता है

- **समाजशास्त्र की प्रकृति की मुख्य विशेषताएँ :**

- (1) समाजशास्त्र एक सामाजिक विज्ञान है, न कि प्राकृतिक विज्ञान।
- (2) समाजशास्त्र एक निरपेक्ष विज्ञान है, न कि आदर्शात्मक विज्ञान।
- (3) समाजशास्त्र अपेक्षाकृत एक अमूर्त विज्ञान है, न कि मूर्त विज्ञान।
- (4) समाजशास्त्र एक सामान्य विज्ञान है, न कि विशेष विज्ञान।

- **बौद्धिक विचार जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है :**

प्राकृतिक विकास के वैज्ञानिक सिद्धांतों और प्राचीन यात्रियों द्वारा पूर्व आधुनिक सभ्यताओं की खोज से प्रभावित होकर उपनिवेशी प्रशासकों, समाजशास्त्रियों एवं सामाजिक मानवविज्ञानियों ने समाजों के बारें में इस दृष्टिकोण से विचार किया कि

उनका विभिन्न प्रकारों में वर्गीकरण किया जाए ताकि सामाजिक विकास के विभिन्न चरणों को पहचाना जा सके।

• **सरल समाज एंव जटिल समाज :**

1. भारत स्वयं परंपरा और आधुनिकता का, गाँव और शहर का, जाति और जनजाति का, वर्ग एंव समुदाय का एक जटिल मिश्रण है।
2. 19 वीं शताब्दी में समाजों का वर्गीकरण किया गया—
 - आधुनिक काल से पहले के समाजों के प्रकार जैसे—शिकारी टोलियाँ एंव संग्रहकर्ता, चरवाहे एंव कृषक, कृषक एंव गैर औद्योगिक सम्यताएँ (सरल समाज)
 - आधुनिक समाजों के प्रकार, जैसे—औद्योगिक समाज (जटिल समाज)
 - डार्विन के जीव विकास के विचारों का आरंभिक समाजशास्त्रिय विचारों पर दृढ़ प्रभाव था।
 - ज्ञानोदय, एक यूरोपीय बौद्धिक आंदोलन जो सत्रहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों एंव अद्वारहवीं शताब्दी में चला, कारण और व्यक्तिवाद पर बल देता है।

सरल समाज एंव जटिल समाज

सरल समाज में श्रम विभाजन नहीं होता जबकि जटिल समाज देखने को मिलता है।

- **भौतिक मुद्दे जिनकी समाजशास्त्र की रचना में भूमिका है।**
- **औद्योगिक क्रांति से आए बदलाव एंव पूँजीवाद :**
 1. औद्योगिक क्रांति एक नए गतिशील आर्थिक क्रियाकलाप—पूँजीवाद पर आधारित थी। पूँजीवाद—आर्थिकव्यवस्था की एक व्यवस्था जोकि बाजार विनियम पर आधारित है। यह व्यवस्था उत्पादन के साधनों और संपत्तियों के निजी स्वामित्व पर आधारित है। औद्योगिक उत्पादन की उन्नति के पीछे यहीं पूँजीवादी व्यवस्था एक प्रमुख शक्ति थी।
 2. उद्यपी निश्चित और व्यवस्थित मुनाफे की आशा से प्रेरित थे।
 3. बाजारों ने उत्पादनकारी जीवन में प्रमुख साधन की भूमिका अदा की। और माल, सेवाएँ एंव श्रम वस्तुएँ बन गईं जिनका निर्धारण तार्किक गणनाओं के द्वारा होता था।
 4. इंगलैड औद्योगिक क्रांति का केंद्र था। औद्योगिकरण द्वारा आया परिवर्तन असरकारी था।
 5. औद्योकीकरण से पहले, अंग्रेजों का मुख्य पेशा खेती करना एंव कपड़ा बनाना था। अधिकांश लोग गाँवों में रहते थे जोकि कृषक, भू—स्वामी, लोहार एंव चमड़ा श्रमिक, जुलाहे, कुम्हार, चरवाह थे। समाज छोटा था। यह स्तरीकृत था। लोगों की स्थिति उनका वर्ग परिभाषित था।
 6. औद्योगिकरण के साथ—साथ शहरी केंद्रों का विकास एंव विस्तार हुआ। इसकी

निशानी थी, फैक्ट्रियों का धुआँ और कालिख, नई औद्योगिक श्रमिक वर्ग की भीड़भाड़ वाली बस्तियाँ, गंदगी और सफाई का नितांत अभाव।

7. अंग्रेजी कारखानों के मशीनों द्वारा तैयार माल के आगमन से भारी तादाद में भारतीय दस्तकार बरबाद हो गए क्योंकि अत्याधिक विकसित कारखानों में उनकी खपत नहीं हो सकती थी। इन बरबाद दस्तकारों ने मुख्यतः जीवन निर्वाह के लिए खेती को अपना लिया।
 - **समाजशास्त्र की अन्य सामाजिक विज्ञानों के मध्य स्थिति एक दृष्टि में :**
 1. सभी सामाजिक विज्ञान समाजशास्त्र से किसी रूप से संबंधित हैं और दूसरी और भिन्न भी हैं।
 2. इनके आपसी सहयोग के द्वारा ही विभिन्न क्षेत्रों का अध्ययन सुचारू रूप से संभव है।
 3. सभी सामाजिक विज्ञानों का क्षेत्र अलग—अलग है, और इन सभी का केंद्र बिंदु सामाजिक प्राणी मानव है।
 4. समाजशास्त्र एक सहयोगी व्यवस्था का निर्माण करता है और सभी विज्ञानों को एक सामान्य पटल पर ले आता है।
 5. इस प्रकार सामाजिक जीवन को जटिलताओं का अध्ययन व विश्लेषण सरलता से संभव है।
 - **समाजशास्त्र एंव मनोविज्ञान में संबंध**

मनोविज्ञान को प्रायः व्यवहार के विज्ञान के रूप में परिभाषित किया जाता है। यह मुख्यतः व्यक्ति से संबंधित है। सामाजिक मनोविज्ञान जो समाजशास्त्र और मनोविज्ञान के बीच एक पुल का कार्य करता है, अपनी प्राथमिक रुचि एक व्यक्ति में रखता है लेकिन उसका इस बात से सरोकार रहता है कि व्यक्ति किस प्रकार सामाजिक रहता है कि व्यक्ति किस प्रकार सामाजिक समूहों में सामूहिक तौर पर अन्य व्यक्तियों के साथ व्यवहार करता है।
 - **समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में संबंध :**

आज अनेक समाजशास्त्रीय अध्ययन आर्थिक समस्याओं को सुलझाने हेतु लगे हैं। इसके अतिरिक्त निर्धनता, बेकारी, जनसंख्या, आर्थिक नियोजन आदि समस्याओं का अण्ययन समाजशास्त्र में सामान्य रूप से किया जाता है। इस प्रकार दोनों ही विज्ञानों को एक—दूसरे से पर्याप्त सहायता लेनी पड़ती है।
 - **समाजशास्त्र और राजनीतिशास्त्र में संबंध :**

समाज पर राज्य के कानूनों का काफी प्रभाव रहता है। कानून के द्वारा राज्य समाज को बदलता है, उसमें सुधार लाता है, परंतु कानून बनाते समय देश के रीति-रिवाजों, प्रथाओं, परंपराओं आदि का ध्यान रखना पड़ता है। इसके लिए समाजशास्त्रीय ज्ञान की आवश्यकता है।
 - **समाजशास्त्र और इतिहास में संबंध :**

संस्कृति और संस्थाओं का इतिहास समाजशास्त्र को समझने और उसकी सामग्री जुटाने में सहायक होता है। वास्तव में समाजशास्त्र ऐतिहासिक निष्कर्षों के आधार पर ही सामाजिक जीवन को समझने का प्रयास करता है।

तुलनात्मक अध्ययन

समाजशास्त्र	अर्थशास्त्र	इतिहास	राजनितिशास्त्र	मनोविज्ञान
1. यह सामाजिक सम्बन्धों का अध्ययन करता है। यह वर्तमान तथा तत्काल वीते हुए समय अध्ययन करता है।	यह केवल आर्थिक गतिविधियों का अध्ययन करता है।	बीते हुए समय का अध्ययन करता है।	यह केवल राज्य के राजनीतिक सिद्धान्त तथा सरकारी प्रशासन का अध्ययन करता है।	यह व्यक्ति की मनोदशा का अध्ययन करता है।
2. इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	इसका विषय क्षेत्र सीमित है।	इसका विषय क्षेत्र सीमित है।
3. इसके अध्ययन के लिए तुलनात्मक तथा सोशॉलेट्री विधि प्रयोग की जाती है।	इसके अध्ययन में आगमन तथा निगमन विधि प्रयोग की जाती है।	इसके अध्ययन में विवरणात्मक विधि का प्रयोग होता है।	इसके अध्ययन में तुलनात्मक विधि का प्रयोग होता है।	इसके अध्ययन में गुणात्मक विधि का प्रयोग किया जाता है।
4. समाजशास्त्र घटनाओं के घटित होने के कारणों को खोजने की कोशिश करता है।	दृष्टिकोण आर्थिक है तथा इसका सम्बन्ध व्यक्ति की भौतिक खुशी से है।	पुरानी इतिहास घटनाओं उसके विकास के अलग—अलग चरणों का अध्ययन करता है।	यह एक विशेष शास्त्र को जानकारी देता है। तथा उसके जीवन के जीवन के राजनीतिक हिस्से का अध्ययन करता है।	मनोविज्ञानिक व्यक्तिगत आशाओं और भय का अध्ययन करते हैं।

2 अंक वाले प्रश्न

- समाज से आप क्या समझते हैं ?
- समाजशास्त्र का जनक किसे माना जाता है ?
- समाजशास्त्र का क्या अर्थ है ?
- भारतीय समाज की असमानताओं की चर्चा कीजिए।
- पूँजीवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।
- अनुभाविक अन्वेषण से आप क्या समझते हैं ?
- नगरीकरण के दो प्रभाव बताइए।
- समष्टि और व्यष्टि समाजशास्त्र में अंतर बताइए।

4 अंक वाले प्रश्न

- समाज की प्रमुख विशेषताएँ।
- भारत में समाजशास्त्र की उत्पत्ति के संबंध में आप क्या जानते हैं ?
- समाजशास्त्र और इतिहास में संबंध स्थापित कीजिए।
- औद्योगीकरण से समाज में आए बदलावों की चर्चा कीजिए।
- उपनिवेशवाद के दौरान भारतीय दस्तकारों की दशा दयनीय क्यों थी ?
- समाजशास्त्र का अध्ययन क्यों आवश्यक है ?

7. सरल समाज और जटिल समाज में अंतर स्पष्ट कीजिए।
8. “मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है” इस कथन को स्पष्ट कीजिए।

6 अंको वाले प्रश्न

1. “समाजशास्त्र सभी सामाजिक विज्ञानों के मध्य सबका है। ‘इस कथन की व्याख्या कीजिए।
2. “भारतीय समाज जिसमें विभिन्नता में एकता के दर्शन होते हैं” –इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
3. समाज के बहुलवादी परिप्रेक्ष्य की चर्चा कीजिए।

अध्याय-2

समाजशास्त्र में प्रयुक्त शब्दावली, संकल्पनाएँ एंव उनका उपयोग

स्मरणीय बिन्दु :

- **सामाजिक समूह** से हमारा अभिप्राय व्यक्तियों के किसी भी ऐसे संग्रह से है जो आपस में एक—दूसरे के साथ सामाजिक संबंध रखते हैं।
- **सामाजिक समूह की विशेषताएँ :**
 - (1) दो या दो से व्यक्तियों का होना।

<p>सामाजिक समूह</p> <p>1. सामाजिक समूह के सदस्यों में आपसी सम्बन्ध पाए जाते हैं।</p> <p>2. सामाजिक समूह में व्यक्तियों एकत्रता को नहीं बल्कि समूह के सदस्यों में आपसी सम्बन्ध होते हैं।</p> <p>3. एकता को भावना पाई जाती है। इसी कारण व्यक्ति आपस में एक दूसरे के साथ जुड़े होते जैसे — हमदर्दी, प्यार आदि।</p>	<p>अर्द्ध समूह</p> <p>1. एक अर्ध समूह एक समुच्चय अथवा समायोजन होता है। जिसमें संरचना अथवा संगठन की कमी होती है।</p> <p>2. समुच्चय सिर्फ लोगों का जमावड़ा होता है। जो एक समय में एक ही स्थान पर एकत्र होते हैं जिनका आपस में कोई निश्चित सम्बन्ध नहीं होता। उदाहरण — रेलवे स्टेशन, बस स्टाप इत्यादि।</p> <p>अर्ध समूह वियोष परिस्थितियों में सामाजिक समूह बन सकते हैं। जैसे — समान आयु एंव लिंग आदि।</p>
-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------	-------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------
 - (2) सामान्य स्वार्थ, उद्देश्य या दृष्टिकोण।
 - (3) सामान्य मूल्य।
 - (4) प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष संबंध।
 - (5) समूह में कार्यों का विभाजन।

- **सामाजिक समूह के प्रकार :**
 - (1) चाल्य कूले के अनुसार प्राथमिक समूह, द्वितीयक समूह।
 - (2) अंतः समूह और बाह्य समूह।
 - (3) संदर्भ समूह।
 - (4) समवयस्क समूह
 - (5) समुदाय और समाज
- **प्राथमिक समूह** संबंधों की पूर्णता और निकटता को व्यक्त करने वाले व्यक्तियों के छोटे समूह हैं।
उदाहरण – परिवार, बच्चों कि खेल समूह, रथायी पड़ोस।
- द्वितीयक समूह वे समूह हैं जो घनिष्ठता की कमी अनूभव करते हैं।
उदाहरण – विभिन्न राजनैतिक दल, आर्थिक महासंघ।
- **प्राथमिक समूह की विशेषताएँ :**
 - (1) समूह की लघुता
 - (2) शारीरिक समीपता
 - (3) संबंधों की निरंतरता तथा स्थिरता
 - (4) सामान्य उत्तरदायित्व
 - (5) सम – उद्देश्य
- **द्वितीयक समूह की विशेषताएँ :**
 - (1) बड़ा आकार
 - (2) अप्रत्यक्ष संबंध
 - (3) विशेष स्वार्थों की पूर्ति
 - (4) उत्तरदायित्व समीति
 - (5) संबंध अस्थायी
- **अंतः समूह और बाह्य समूह में अंतर :**

अंत समूह	बाह्य समूह
(1) 'हम भावना' पाई जाती है।	(1) 'हम भावना' का अभाव रहता है।
(2) संबंधों में निकटता।	(2) संबंधों में दूरी।
(3) समूह के सदस्यों के प्रति त्याग और सहानुभूति की भावना।	(3) त्याग और सहानुभूति का औपचारिक ढोंग।
(4) सुख – दुःख की ओतरिक भावना।	(4) सुख – दुःख का बाहरी रूप।
- **संदर्भ समूह :**
किसी भी समूह के लोगों के लिए हमेशा ऐसे दूसरे समूह होते हैं जिनको वे अपने

आदर्श की तरह देखते हैं और उनके जैसे बनना चाहते हैं। वे समूह जिनकी जीवनशैली का अनुकरण किया जाता है। संदर्भ समूह कहलाते हैं। उदाहरण – नई युवा पीढ़ी में फिल्मी कलाकारों जैसे कपड़े पहनने आदि।

- **समवयस्क समूह :**

यह एक प्रकार का प्राथमिक समूह है, जो सामान्यतः समान आयु के व्यक्तियों के बीच अथवा सामान्य व्यवसाय के लोगों के बीच बनता है।

<u>समुदाय</u>	<u>समाज</u>
समुदाय से तात्पर्य उन सम्बन्धों से है जो बहुत अधिक व्यक्तिक, घनिष्ठ और चिरस्थायी होते हैं।	यहाँ समान या यंघ का तात्पर्य हर तरह के समुदाय के विपरीत है। विशेषतः आधुनिक नगरीय जीवन के सम्बन्ध स्पष्टतः अव्यक्तिक बाहरी और अस्थायी होते हैं।

- **सामाजिक स्तरीकरण :**

समाज के अंतर्गत पाए जाने वाले विभिन्न समूहों का ऊँच – नीचे या छोटे – बड़े के आधार पर विभिन्न स्तरों में बँट जाना ही सामाजिक स्तरीकरण कहलाता है।

- **सामाजिक स्तरीकरण की विशेषताएँ :**

- (1) स्तरीकरण की प्रकृति सामाजिक है।
- (2) स्तरीकरण काफी पुराना है।
- (3) प्रत्येक समाज में स्तरीकरण पाया जाता है।
- (4) स्तरीकरण के विभिन्न स्वरूप होते हैं आयु, वर्ग, जाति।
- (5) स्तरीकरण से जिवनशैली में विभिन्नता पाई जाती है।

- **जाति के आधार पर स्तरीकरण :**

- (1) जाति व्यक्ति के स्तरीकरण में ब्राह्मण सबसे ऊँचे स्तर पर हैं तथा शुद्र निम्न स्तर पर हैं।
- (2) यह स्तरीकरण अब पूर्णतया बंद है।
- (3) जाति संरचना में प्रत्येक जाति का संस्तरण ऊँच – नीच के आधार पर बना हुआ है।
- (4) जो व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है, समाज में उसे उसी जाति का संस्तरण प्राप्त होता है।
- (5) समाज को चार वर्णों में विभाजित किश गया है –ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शुद्र।

- **जाति व्यवस्था के बदलते प्रतिमान :**

- (1) खान – पान संबंधी प्रतिबंधों में परिवर्तन।
- (2) व्यवसायिक प्रतिबंधों में परिवर्तन।
- (3) विवाह संबंधी प्रतिबंधों में परिवर्तन।

- (4) शिक्षा संबंधी प्रतिबंधों में परिवर्तन।
- वर्ग का आधार पर स्तरीकरण :
 - (1) वर्ग के आधार पर स्तरीकरण जन्म पर आधारित नहीं है वरन् कार्य, योग्यता, कुशलता, शिक्षा, विज्ञान आदि पर आधारित है।
 - (2) वर्ग के द्वारा सबके लिए खुले हैं।
 - (3) व्यक्ति अपने वर्ग को बदल सकता है और प्रयास करने पर सामाजिक स्तरीकरण में ऊँचा स्थान प्राप्त कर सकता है।
- (4) वर्ग के प्रकार
 - उच्च वर्ग
 - मध्यम वर्ग
 - निम्न वर्ग
 - कृषक वर्ग
- जाति और वर्ग में अंतर :

जाति	वर्ग
1. जाति जन्म आधारित है।	1. सामाजिक प्रस्थिति पर आधारित है।
2. जाति एक बंद समूह है।	2. वर्ग एक खुली व्यवस्था है।
3. विवाह, खान – पान आदि के कठोर नियम हैं।	3. वर्ग में कठोरता नहीं है।
4. जाति व्यवस्था स्थिर संगठन है।	4. वर्ग व्यवस्था जाति व्यवस्था के मुकाबले कम स्थिर है।
5. यह प्रजातंत्र व रास्ट्रवाद के प्रतिकूल है।	5. प्रजातंत्र और राष्ट्रवाद में बाधक नहीं

- सामाजिक प्रस्थिति : प्रस्थिति व्यक्ति को समाज में प्राप्त स्थान है। प्रस्थिति को प्रमुख तौर पर दो भागों में बाँटा गया है :

 - (1) प्रदत्त प्रस्थिति : यह प्रस्थिति जन्म पर आधारित होती है जोकि बिना किसी प्रयास के स्वतः ही मिल जाती है। प्रदत्त प्रस्थिति के आधार निम्नलिखित हैं :
 - जाति
 - नातेदारी
 - जन्म
 - लिंग भेद
 - आयु भेद
 - (2) अर्जित प्रस्थिति : जिन पदों या स्थानों को व्यक्ति अपने व्यक्तिगत गुणों के आधार पर प्राप्त करता है, वे अर्जित प्रस्थितियाँ होती हैं।
अर्जित प्रस्थिति के आधार निम्नलिखित हैं :

- शिक्षा
- प्रशिक्षण
- धन — दौलत
- व्यवसाय
- राजनीतिक सत्ता
- **प्रस्थिति ओर प्रतिष्ठा अंत : संबंधित शब्द हैं :**
प्रत्येक प्रस्थिति के अपने कुछ अधिकार और मूल्य होते हैं। परिस्थिति या पदाधिकार से जुड़े मूल्य के प्रकार प्रतिष्ठा कहते हैं। अपनी प्रतिष्ठा के आधार पर लोग अपनी प्रस्थिति को ऊँचा या नीचा दर्जा दे सकते हैं। उदाहरण — एक दुकानदार की तुलना में एक डॉक्टर की प्रतिष्ठा ज्यादा होगी चाहे उसकी आय कम ही क्यों न हो।
- **भूमिका :**
जिसे व्यक्ति प्रत्येक के अनुरूप निभाता है।
- **भूमिका संघर्ष :**
यह एक से अधिक प्रस्थितियों से जुड़ी भूमिकाओं की असंगतता है। यह तब होता है जब दो या अधिक भूमिकाओं से विरोधी अपेक्षाएँ पैदा होती हैं। उदाहरण — एक मध्यमवर्गीय कामकाजी महिला जिसे घर पर माँ तथा पत्नी की भूमिका में और और कार्य स्थल पर कुशल व्यवसाय की भूमिका निभानी पड़ती है।
- **भूमिका स्थिरीकरण :**
यह समाज के कुछ सदस्यों के लिए कुछ विशिस्ट भूमिकाओं को सुदृढ़ करने की प्रक्रिया है। उदाहरण — अक्सर पुरुष कमाने वाले और महिलाएँ घर चलाने वाली रुद्धि बद्ध भूमिकाओं को निभाते हैं।
- **सामाजिक नियंत्रण :**
एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसके द्वारा समाज में व्यवस्था स्थापित होती है और बनाए रखी जाता है।
- **सामाजिक नियंत्रण की आवश्यकता या महत्व :**
 - (1) सामाजिक व्यवस्था को स्थापित करना।
 - (2) मानव व्यवहार को नियंत्रण करना।
 - (3) संस्कृति के मौलिक तत्त्वों की रक्षा।,
 - (4) सामाजिक सुरक्षा।
 - (5) समूह में एकरूपता।
- **सामाजिक नियंत्रण के प्रकार :**
 - (1) **औपचारिक नियंत्रण :** जब नियंत्रण के संहिताबद्ध, व्यवस्थित और अन्य औपचारिक साधन प्रयोग किए जाते हैं तो औपचारिक सामाजिक नियंत्रण

उदाहरण—कानून, राज्य, पुलिस आदि। अपराध की गंभीरता के अनुसार यह दंड साधारण जुर्माने से लेकर मृत्युदंड हो सकता है।

- (2) **अनौपचारिक नियंत्रण :** यह व्यक्तिगत, अशासकीय और असंहिताबाद्ध होता है। उदाहरण — धर्म, प्रथा, परंपरा, रुढ़ि आदि ग्रामीण समुदाय में जातीय नियमों का उल्लंघन करने पर हुक्का — पानी बंद कर दिया जाता है।

सामाजिक नियन्त्रण के दृष्टिकोण

- **प्रकार्यवादी दृष्टिकोण** — व्यक्ति और समूह के व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए बल का प्रयोग करना।
 2. समाज में व्यवस्था बनाए रखने के लिए मूल्यों और प्रतिमानों को लागू करना।
- **संघर्षवादी दृष्टिकोण** — समाज के प्रभावों वर्ग का बाकी समाज पर नियंत्रण को सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में देखते हैं।
 2. कानून को समाज में शक्तिशालियों और उनके हितों के औपचारिक दस्तावेज के रूप में देखना।

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक समूह से आप क्या समझते हैं ?
2. संदर्भ समूह किसे कहते हैं ?
3. भूमिका से क्या तात्पर्य है ?
4. प्रदत्त तथा अर्जित प्रस्थिति में अंतर बताइए ।
5. प्राथमिक समूह की परिभाषा दीजिए ।
6. अंतः समूह की परिभाषा दीजिए ।
7. समुदाय से आप क्या समझते हैं ?
8. समवयस्क समूह किसे कहते हैं ?
9. सामाजिक स्तरीकरण से आप क्या समझते हैं ?
10. सामाजिक नियंत्रण को समझाएँ ?
11. जाति आधारित स्तरीकरण से क्या अभिप्राय है ?
12. जाति व्यवस्था के बदलते प्रतिमानों के दो आधारों का उल्लेख किजिए ।
13. वर्ग स्तरीकरण के दो प्रमुख आधार लिखें ।
14. भूमिका संघर्ष से आप क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक प्रस्थिति का अर्थ स्पष्ट कीजिए तथा इसके दो भेदों के नाम बताइए ।
2. द्वैतीयक समूह क्या है ? द्वैतीयक समूहों की कोई दो विशेषताएँ बताइए ।

3. सामाजिक समूह की विशेषताएँ लिखिए ।
4. सामाजिक स्तरीकरण की विशषताओं का वर्णन कीजिए ।
5. जाति और वर्ग में अंतर बताइए ।
6. सामाजिक नियंत्रण के महत्व लिखिए ।
7. सामाजिक नियंत्रण के प्रकारों की चर्चा उदाहरणों सहित कीजिए ।
8. भूमिका स्थिरीकरण को उदाहरण सहित समझाएँ ।
9. अर्जित प्रस्थिति किसे कहते हैं ? उदारिण देते हुए दो आधार लिखिए ।

6 अंक वाले प्रश्न

1. “जाति एक बंद स्तरीकरण है जबकी वर्ग एक खुला स्तरीकरण ।” इस कथन को स्पष्ट कीजिए ।
2. “प्रस्थिति और प्रतिष्ठा अंतः संबंधित शब्द है ।” इस कथसन को स्पष्ट कीजिए ।
3. भूमिकाओं के संदर्भ में आप कार्य – ग्रहण और कार्य प्रत्याशा से क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित समझाएँ ।
4. प्रदत्त प्रस्थिति से आप क्या समझते हैं ? प्रदत्त प्रस्थिति के कोई चार आधारों की चर्चा कीजिए ।

अध्याय-3

सामाजिक संस्थाओं को समझना

स्मरणीय बिन्दु :

- सामाजिक संस्थाओं को सामाजिक मानकों, आस्थाओं, मूल्यों और समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निर्मित संबंधों की भूमिका के जटिल ताने – बाने के रूप में देखा जाता है।
- महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाएँ हैं :

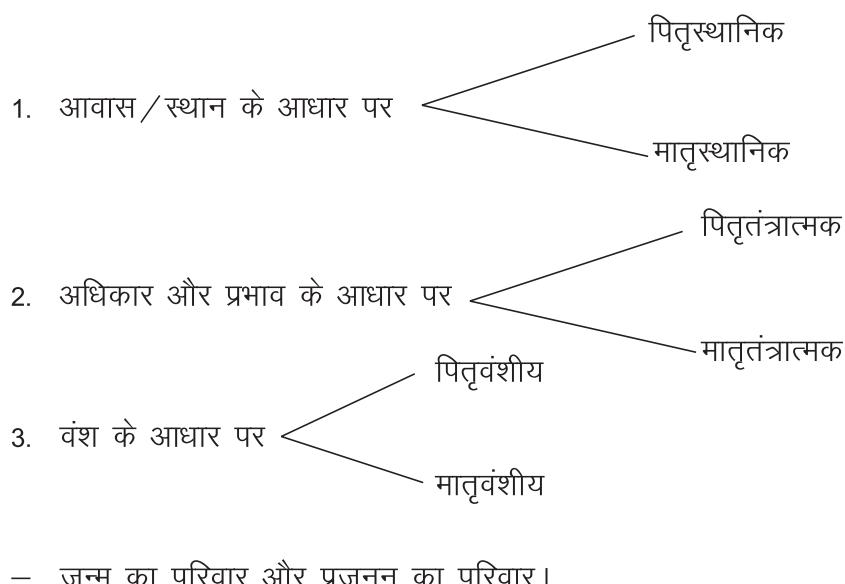


— संस्था उसे कहा जाता है जो स्थापिज या कम से कम कानून या प्रथा द्वारा स्वीकृत नियमों के अनुसार कार्य करती है और उसके नियमित तथा निरंतर कार्यचालन को इन नियमों काम जाने बिना समझा नहीं जा सकता। संस्थाएँ व्यक्तियों पर प्रतिबंध लगाती है, साथ ही ये व्यक्तियों को अवसर भी प्रदान करती हैं।

सामाजिक संस्थाएँ सामाजिक जरूरतों को पूरा करने के लिए विद्यमान होती है।

- मूल परिवार को औद्योगिक समाज की आवश्यकताएँ पूरी करने वाली एक सर्वोत्तम साधन संपन्न इकाई के रूप में देखा जाता है। ऐसे परिवार में घर का एक सदस्य से बाहर कार्य करता है और दूसरा सदस्य घर व बच्चों की देखभाल करता है।

विभिन्न समाजों में परिवार के विभिन्न स्वरूप पाए जाते हैं :



- एकल परिवार और संयुक्त परिवार।
- **महिला प्रधान घर/परिवार**
जब पुरुष शहरी क्षेत्रों में चलूँ जाते हैं तो महिलाओं को हल चलाना पड़ता है और खेती के कार्यों का प्रबंध करना पड़ता है। कई बार वे अपने परिवार की एकमात्र भरण—पोषण करने वाली बन जाती हैं। ऐसे परिवारों को महिला—प्रधान घर कहा जाता है। उदाहरण—उरी आंध्र प्रदेश में कोलम जनजाती समुदाय।
- **परिवार लिंगवादी होता है—**
आज भी यही विश्वास है कि लड़का वृद्धावडथा में अभिभावकों की सहायता करेगा और लड़की विवाह करके दूसरे घर चली जाएगी। इस तरह लड़कियों की अपेक्षा की जाती है। कन्या भ्रूण हत्या को बढ़ावा मिलता है। 2001 की जनगणना के अनुसार प्रति हजार लड़कों पर 927 लड़कियाँ हैं। समृद्ध राज्यों जैसे—पंजाब, हकरयाणा, महा राष्ट्र और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में हालात बहुत खराब हैं।
- परिवार प्रत्यसक्ष नातेदारी संबंधों से जुड़े संबंधों से जुड़ते व्यक्तियों का एक समूह है। नातेदारी बंधन व्यक्तियों के बीच के वह सूत्र होते हैं जो या तो विवाह के माध्यम से या वंश परस्पर के माध्यम से रक्त संबंधियों को जोड़ते हैं।
- रक्त के माध्यम से बने नातेदारों को समरक्त नातेदार/रक्तमूलक नातेदार और विवाह के माध्यम से बने नातेदारों को वैवाहिक नातेदार/विवाहमूलक नातेदार दक्षते हैं।
- **विवाह संस्था**
 1. विवाह को दो वयस्क (रुत्री/पुरुष) व्यक्तियों के बीच लैगिक संबंधों की सामाजिक स्वीकृति और अनुमोदन के रूप में परिभाषित किया जाता है।
 2. **विवाह के विभिन्न स्वरूप :**

एक विवाह (यह विवाह एक व्यक्ति को एक समय में एक ही साथी रखने तक सीमित करता है)	बहु-विवाह (यह विवाह एक व्यक्ति को एक समय में एक ही साथी रखने तक अनुमती देता है)
बहु-पत्नी विवाह (एक की अनेक पत्नियाँ)	बहु-पति विवाह (एक पत्नी के अनेक पति)
- **अंतर्विवाह :** इस विवाह में व्यक्ति उसी सांस्कृतिक समूह में विवाह करता है जिसका वह पहले से ही सदस्य है। उदाहरण—जाति।
- **बहिर्विवाह :** इस विवाह में व्यक्ति अपने समूह से बाहर विवाह करता है। उदाहरण—गोत्र, जाति और नस्ल।
- **कार्य और आर्थिक जीवन :**

कार्य को शारीरिक और मानसिक परिश्रमों के द्वारा किए जाने वाले ऐसे सवैतनिक या अवैतनिक कार्यों के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जिनका उद्देश्य मानव की आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए वर्तुओं और सेवाओं का उत्पादन करना है।

- आधुनिक समाजों की अर्थव्यवस्था की अनेक महत्वपूर्ण विशेषताएँ हैं:
 - अत्याधिक जटिल श्रम में विभाजन
 - कार्य के स्थान में परिवर्तन
 - औद्योगिक प्रौद्योगिकी में विकास
 - पूँजीपति उद्योगपतियों के कारखाने
 - विशिष्ट कार्य के अनुसार वेतन
 - प्रबंधक द्वारा कार्यों का निरीक्षण
 - श्रमिक की उत्पादकता बढ़ाना और अनुशासन बनाए रखना
 - परस्पर आर्थिक का असीमित विस्तार
- **कार्य रूपांतरण :**
 - औद्योगिक प्रक्रियाएँ सरल संक्रियाओं में विभाजित।
 - थोक उत्पादन के लिए थोक बाजारों की आवश्यकता।
 - उत्पादन की प्रक्रिया में नव परिवर्तन, स्वचालित उत्पादन की कड़ियों का निर्माण।
 - उदार उत्पादन और कार्य विकेंद्रीकरण।
- राजनीति संस्थाओं का सरोकार समाज के दो महत्वपूर्ण पहलू है।
 - **शक्ति :** शक्ति व्यक्तियों सा समूहों द्वारा दूसरों के विरोध करने के बावजूद अपनी इच्छा पूरी करने की योग्यता है।
 - **सत्ता :** शक्ति का उपयोग सत्ता के माध्यम से किया जाता है। सत्ता शक्ति का वह रूप है जिसे वैध होने के रूप में स्वीकार किया जाता है।
 - राजविहीन समाज ऐसा समाज जिसमें सरकार करी औपचारिक संस्थाओं का अभाव हो।
 - राज्य की संकल्पना राज्य वहाँ विद्यमान होता है जहाँ सरकार का एक राजनीतिक तंत्र एक निश्चित क्षेत्र पर शासन करता है।
- आधुनिक राज्य प्रभुसत्ता, नागरिकता और अवसर रास्ट्रवादी विचारों द्वारा परिभाषित है :
 - **प्रभुसत्ता :** प्रभुसत्ता का अभिप्राय एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र पर एक राज्य के अविवादित शासन से है।

उदाहरण :

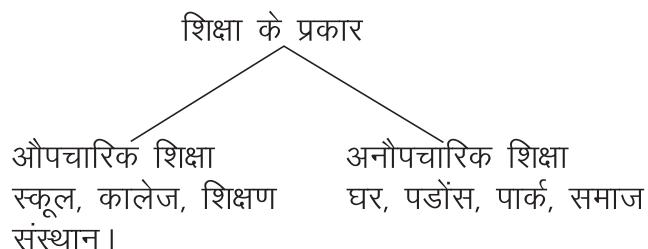
नागरिकता के अधिकार :

- (1) नागरिक अधिकार : भाषण और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार।

- (2) राजनीतिक अधिकार : चुनाव में शामिल होने का अधिकार।
- (3) सामाजिक अधिकार : स्वास्थ्य लाभ, समाज कल्याण, बेरोजगारी भत्ता और न्यूनतम मजदूरी निर्धारित करने के अधिकारी।
- धर्म : इमाइल दुर्खीम के अनुसार “धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित अनेक विश्वासों अनेक विश्वासों और व्यवहारों की एक ऐसी संगठित व्यवस्था है जो व्यक्तियों को एक नैतिक समुदाय की भावना में बाँधती है जो उसी प्रकार विश्वासों और व्यवहारों को अभिव्यक्त करते हैं।”
 - सभी धर्मों की समान विशेषताएँ हैं :
 1. प्रतीकों का समुच्चय, श्रद्धा या सम्मान की भावनाएँ
 2. अनुष्ठान या समारोह
 3. विश्वासकर्ताओं का एक समुदाय
- विशेष प्रकार का भोजन
-
4. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार कि होते हैं।

5. सामाजिक शक्तियाँ हमेशा और अनिवार्यतः धार्मिक संस्थाओं को प्रभावित करती हैं। धार्मिक अनुष्ठान प्रायः व्यक्तियों द्वारा अपने दैनिक जीवन में किए जाते हैं। धर्म एक पवित्र क्षेत्र है। जो बात सबमें समान है वह है श्रद्धा की भावना, पवित्र स्थानों या स्थितियों की पहचान और अनेक प्रति सम्मान की भावना।
- शिक्षा : शिक्षा सपूर्ण जीवन चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें सीखने की औपचारिक और अनौपचारिक दोनों प्रकार की संस्थाएँ शामिल हैं।
- शिक्षा स्मरीकरण के मुख्य अभिकर्ता के रूप में कार्य करती है :
- सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर विभिन्न प्रकार के विद्यालयों में जाते हैं।
- विद्यालयी शिक्षा, संभ्रांत और सामान्य के बीच विद्यमान भेद को और अधिक गहरा करती है।
- विशेषाधिकारी प्राप्त विद्यालयों में जाने वाले बच्चों में आत्मविश्वास आ जाता है जबकि इससे वंचित बच्चे इसके विपरीत भाव का अनुभव कर सकते हैं।
- ऐसे और अनेक बच्चे हैं जो विद्यालय नहीं जा सकते या विद्यालय जाना बीच में ही छोड़ देते हैं।
- लिंग और जातिगत भेदभाव किस तरह शिक्षा के अवसरों का अतिक्रमध करते हैं।
- परिवार के स्वरूपों में परिवर्तन
1. संयुक्त परिवारों का टूटना।

2. पारिवारिक व्यवसायों में कमी।
3. स्त्रियों का शिक्षित और आत्मनिर्भर होना।
4. आर्थिक असुरक्षा के कारण देरी से विवाह या विवाह न करना।
5. नगरों में सम्बन्ध विच्छेद व तलाक के मामलों का बढ़ना।



2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक संस्था सं आप क्या समझते हैं ?
2. औपचारिक और अनौपचारिक सामाजिक संस्थाओं के उदाहरण दीजिए।
3. परिवार से क्या तात्पर्य है ?
4. विवाह से आप क्या समझते हैं ?
5. एक विवाह और बहुविवाह मे अन्तर स्पष्ट किजिए।
6. नातेदारी क्या है ?
7. समरक्त नातेदार क्या है ?
8. वैवाहिक नातेदारी क्या है ?
9. कार्य से आप क्या समझते हैं ?
10. कार्य के विकेंद्रीकरण से आप क्या तात्पर्य है ?
11. राजनीतिक संस्था से क्या तात्पर्य है ?
12. राष्ट्रवाद से आप क्या समझते हैं ?
13. प्रभुसत्ता से क्या तात्पर्य है ?
14. सामाजिक गतिशीलता क्या है ?
15. राज्यविहीन समाज से क्या समझते हैं ?
16. धर्म से क्या तात्पर्य है ?
17. शिक्षा से क्या तात्पर्य है ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक संस्थान, बोध संबंधी के कारण विचारधराओं का उल्लेख कीजिए।
2. “आर्थिक प्रक्रियाओं के कारण परिवार और परिवर्तित होते रहते हैं” चर्चा कीजिए।
3. महिला-प्रधान घर को उदाहरण सहित समझाइये।

4. विवाह संबंधी नियमों को समझाइये।
5. एक विवाह और बहुविवाह में अंतर स्पष्ट किजिए।
6. परिवार के स्पर्सूप में आ रहे परिवर्तनों का उल्लेख कीजिए।
7. जनगणनाओं से स्पष्ट होता हे कि परिवार लिंगवादी है— समझाइये।
8. “शक्ति का उपयोग सत्ता के माध्यम से किया जाता है” इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
9. “नागरीकता के अधिकारों में नागरिक, राजनितिक और सामाजिक अधिकार शामिल है” इस कथन को स्पष्ट किजिए।
10. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार के होते हैं, उल्लेख कीजिए।
11. धर्म के साथ संबद्ध अनुष्ठान विविध प्रकार के होते हैं, उल्लेख कीजिए।
12. धर्म समाजे में महत्वपूर्ण है, समझाइए।
13. धर्म पर विभिन्न समाजशास्त्रियों के विचारों का उल्लेख किजिए।
14. शिक्षा सामाजिक स्तरीकरण के मुख्य अधिकर्ता के रूप में कार्य करती है— स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. विवाह एक सामाजिक संस्था है, चर्चा कीजिए।
2. आधुनिक समाज में आर्थिक व्यवस्थाओं के विशिष्ट लक्षणों का उल्लेख कीजिए।
3. राज्य की संकल्पना स्पष्ट कीजिए।
4. “शिक्षा जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है”— इस कथन को स्पष्ट किजिए।

अध्याय-4

संस्कृति तथा समाजीकरण

- सामाजिक अंतः क्रिया के द्वारा संस्कृति सीखी जाती है। तथा इसका विकास होता है।
टायरल के अनुसार : “संस्कृति वह जटिल पूर्णता है जिसके अंतर्गत ज्ञान, विश्वास, कला नीति, कानून, प्रथा और अन्य क्षमताएँ व आदतें सम्मिलित हैं कजन्हें मनष्य समाज के सदस्य के रूप में ग्रहण करता है।”
- **संस्कृति—**
 1. सोचने, अनुभव करने तथा विश्वास करने का एक तरीका है।
 2. लोगों के जीने का एक संपूर्ण तरीका है।
 3. व्यवहार का सारांश है।
 4. सीखा हुआ व्यवहार है।
 5. सीखी हुई चीजों का एक भंडार है।
 6. सामाजिक धरोहर है जोकि व्यक्ति अपने समूह से प्राप्त करता है।
 7. बार—बार घट रही समस्याओं के लिए मानवकृत दिशाओं का एक समुच्चय हैं।
 8. व्यवहार के मानकीय नियमितिकरण हेतु एक साधन है।
- जीवन तथा संस्कृति के विविध परिवेश का उद्गम विभिन्न व्यवस्था के कारण है।
- आधुनिक विज्ञान तथा तकनीक तक पहुँच होने से आधुनिक सांस्कृतिक द्वीपों में रहने वाली जनजातियां की संस्कृति सं बेहतर नहीं हो जाती।
- **संस्कृति के आयाम :**
 - (1) **संस्कृति संज्ञानात्मक पक्ष :** संज्ञानात्मक का संबंध से है, अपने वातावरण से प्राप्त होने वाली सूचना का हम कैसे उपयोग करते हैं।
 - (2) **मानकीय पक्ष :** मानकीय पक्ष में लोकरीतियाँ, लोकाचार, प्रथाएँ, परिपाटियाँ तथा कानून शामिल हैं। यह मूल्य या नियम हैं जो विभिन्न संदर्भों में सामाजिक व्यवहार को दिशा निर्देश देते हैं। सभी सामाजिक मानकों के साथ स्वीकृतियों मानकों के साथ स्वीकृतियाँ होती हैं जो कि अनुरूपता को बढ़ावा देती है।
 - (3) **संस्कृति के भौतिक पक्ष :** भौतिक पक्ष औजारों, तकनीकों, भवनों या यातायात के साधनों के साथ—साथ उत्पादन तथा संप्रेषण के उपकरणों से संदर्भित है।
- **संस्कृति के दो मुख्य आयाम हैं :**
 1. **भौतिक :** भौतिक आयाम उत्पादन बढ़ाने तथा जीवन स्तर को ऊपर उठाने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
उदाहरण— औजार, तकनीकी, यंत्र, भवन तथा यातायात के साधन आदि।

2. अभौतिक— संज्ञानात्मक तथा मानकीय पक्ष अभौतिक है।

उदाहरण— प्रथाएँ आदि।

- संस्कृति के एकिकृत कार्यों हेतु भौतिक तथा अभौतिक आयामों को एकजुट होकर कार्य करना चाहिए।
- भौतिक आयाम तेजी से बदलते हैं तो मूल्यों तथा मानकों की दृष्टि से अभौतिक पक्ष पिछड़ सकते हैं। इससे संस्कृति के पिछड़ने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

भौतिक संस्कृति

1. भौतिक संस्कृति मूर्त होती है जिसे हम देख सकते हैं छू सकते हैं। जैसे — किताब, पैन, कुर्सी आदि।
2. भौतिक संस्कृति को हम गुणात्मक रूप से माप सकते हैं।
3. भौतिक संस्कृति में परिवर्तन तेजि से आते हैं क्योंकि संसार में परिवर्तन तेजी से आते हैं।
4. भौतिक संस्कृति में किसी नई चीज का अविष्कार होता है। तो इसका लाभ कोई भी व्यक्ति व समाज उन सकता है।
5. भौतिक संस्कृति के तत्व आकर्षक होते हैं इसलिए हम इसे आसानी से स्वीकार का लेते हैं।

अभौतिक संस्कृति

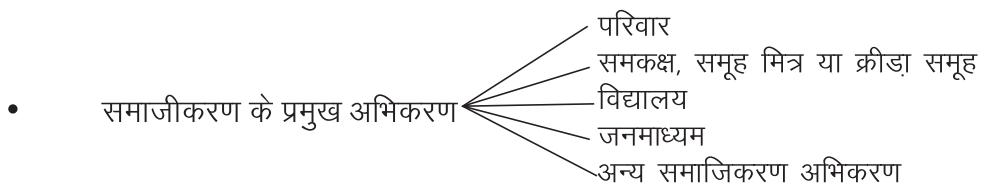
1. अभौतिक संस्कृति अमूर्त होती है जिसे हम देख व हूँ नहीं सकते महसूस कर सकते हैं। जैसे — विचार, आदर्श, इत्यादि।
2. अभौतिक संस्कृति को हम गुणात्मक रूप से आसानी सं नहीं माप सकते हैं।
3. अभौतिक संस्कृति में परिवर्तन धीरे—धीरे आते हैं क्योंकि लोगों के विचार धीरे—धीरे बदलते हैं।
4. अभौतिक संस्कृति के तत्वों का लाभ सिर्फ उसी समाज के सदस्य उठा सकते हैं।
5. अभौतिक संस्कृति के तत्व आकर्षक नहीं होते इसलिए हम इसमें आने वाले परिवर्तनों को आसानी से स्वीकार नहीं करते।

• कानून एवं प्रतिमान में अंतर :

1. मानदंड अस्पष्ट नियम हैं जबकी कानून स्पष्ट नियम है।
2. कानून सरकार द्वारा नियम के रूप में परिभाषित औपचारिक स्वीकृति है।
3. कानून पूरे समाज पर लागू होते हैं तथा कानूनों का उल्लंघन करने पर जुर्माना तथा सजा हो सकती है।
4. कानून सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत किए जोत हैं, जबकि मानक सामाति?जक परिस्थिति के अनुसार।

- पहचान विरासत में नहीं मिलती अपितु यह व्यक्ति तथा समाज को इनके दूसरे व्यक्तियों के साथ संबंधों से प्राप्त होती है।
- आधुनिक समाज में प्रत्येक व्यक्ति बहुविध भूमिकाएँ अदा करता है।
- किसी भी संस्कृति की अनेक उपसंस्कृतियाँ हो सकती हैं, जैसे संभ्रांत तथा कामगार वर्ग के युवा। उपसंस्कृतियों की पहचान शैली, रुचि तथा संघ से होती है।

- **नृजातीयता :** नृजातीयता से आशय अपने सांस्कृतिक मूल्यों का अन्य संस्कृतियों के लोगों के व्यवहार तथा आस्थाओं का मूल्यांकन करने के लिए प्रयोग करने से है। जब संस्कृतियाँ एक दूसरे के संपर्क में आती हैं तभी नृजातीयता की उत्पत्ति होती है।
- नृजातीयमा विश्वबंधुता के विपरित है जोकि संस्कृतियों को उनके अंतर के कारण महत्व देती है।
- विश्वबंधुता पर्यवेक्षण अन्य व्यक्तियों के मुलयों तथा आस्थाओं का मूल्यांकन अपने मूल्यों तथा आस्थाओं के अनुसार नहीं करता।
- एक आधुनिक समाज सांस्कृतिक विकभन्नता का प्रशंसक होता है।
- एक विश्वापी पर्यवेक्षण प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संस्कृति प्रभावों द्वारा सशक्त करने की स्वतंत्रता देता है।
- **सामाजिक परिवर्तन :**
यह वह तरीका है जिसके द्वारा समाज अपनी संस्कृति के प्रतिमानों को बदलता है। सामाजिक परिवर्तन आंतरिक या बाहरी हो सकते हैं :
 1. **आंतरिक :** कृषि या खेती करने की नई पद्धतियाँ।
 2. **बाहरी :** हस्तक्षेप जीत या उपनिवेशीकरण के रूप में हो सकते हैं।
- प्राकृतिक वातावरण में परिवर्तन अन्य संस्कृतियों से संपर्क या अनुकूलन की प्रक्रियाओं द्वारा सांस्कृतिक परिवर्तन हो सकते हैं।
- क्रांतिकारी परिवर्तनों की शुरूआत राजनितिक हस्तक्षेप तकनीकी खोज परिस्थितीकीय रूपांतरण के कारण हो सकती है उदाहरण – फ्रांसीसी क्रांति ने राजतंत्र को समाप्त किया प्रचार तंत्र, इलेक्ट्रॉनिक तथा मुद्रण।
- **सामाजिकरण :**
वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज का सदस्य बनना सीखते हैं।
- यह जीवनभर चलने वाली प्रक्रिया है।
- **प्राथमिक तथा द्वितीयक सामाजीकरण**
प्राथमिक समाजीकरण : बच्चे का प्राथमिक समाजीकरण उसके शिशुकाल तथा बचपन में शुरू होता है। यह बच्चे का सबसे महत्वपूर्ण एंव निर्णायक स्तर होता है। बच्चा अपने बचपन में ही इस स्तर मूलभूत व्यवहार सीख जाता है।
- **द्वितीयक समाजीकरण :** द्वितीयक समाजीकरण बचपन की अंतीम अवस्था से शुरू होकर जीवन में परिपक्वता आने तक चलता है।



समाजीकरण की प्रक्रिया एक जटिल प्रक्रिया है, जिसमें अनेक संस्थाओं या अभिकरणों का योगदान होता है समाजीकरण के प्रमुख अभिकरण इस प्रकार हैं।

- **परिवार :** समाजीकरण करने वाली संस्था या अभिकरण के रूप में परिवार का महत्व वास्तव में असाधारण है। बच्चा पहले परिवार में जन्म लेता है, और इस रूप में वह परिवार की सदस्यता ग्रहण करता है।
- **समकक्ष, समूह मित्र या क्रीड़ा समूह :** बच्चों के मित्र या उनके साथ खेलने वाले समूह भी एक महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह होते हैं। इस कारण बच्चों के समाजीकरण की प्रक्रिया में इनका अत्यंत प्रभावशाली स्थान होता है।
- **विद्यालय :**
विद्यालय एक औपचारिक संगठन है।
औपचारिक पाठ्यक्रम के साथ-साथ बच्चों को सिखाने के लिए कुछ अप्रत्यक्ष पाठ्यक्रम भी होता है।
- **जन – माध्यम :**
जन माध्यम हमारे दैनिक का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं।
इलेक्ट्रॉनिक माध्यम और मुद्रण माध्यम का महत्व भी लगातार बना हुआ है।
जन माध्यमों के द्वारा सूचना ज्यादा लोकतांत्रिक ढंग से पहुँचाई जा सकती है।
- **अन्य समाजीकरण अभिकरण :**
सभी संस्कृतियों में कार्यस्थल एक ऐसा महत्वपूर्ण स्थान है जहाँ समाजीकरण की प्रक्रिया चलती है।
धर्म, सामाजिक जाति / वर्ग आदि।

2 अंक वाले प्रश्न

1. संस्कृति का क्या अर्थ है ?
2. भौतिक और अभौतिक संस्कृति में क्या अंतर है ?
3. उपसंस्कृति से क्या आशय है ?
4. संस्कृतिक परिवर्तन क्या है ?
5. संस्कृतिक विकासवाद से आप क्या समझते हैं।
6. संस्कृति के तीन आयाम बताइये।
7. संस्कृति विलम्ब / संस्कृति का पिछड़ापन से क्या आशय है ?

8. पगतिमसन से आप क्या समझते हैं ?
9. नृजातीयता से क्या तात्पर्य है ?
10. समाजीकरण से आप क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. संस्कृति शब्द पर विस्तारपूर्वक चर्चा कीजिए।
2. संस्कृति के संज्ञानात्मक और मानकीय पक्षों का उल्लेख कीजिए।
3. संस्कृति के भौतिक पक्ष स्पष्ट कीजिए।
4. “नृजातीयता विश्वबंधुता के विपरीत है” – समझाइये।
5. समाजीकरण के प्रमुख चरणों का उल्लेख कीजिए।
6. कानून और मानक में अंतर स्पष्ट कीजिए।
7. क्रांतिकारी परिवर्तन से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. विविध परिवेश में विभिन्न संस्कृतियों का वर्णन कीजिए।
2. संस्कृति के प्रमुख आयामों का उल्लेख कीजिए।
3. “पहचान विरासत में नहीं मिलती अपितु यह व्यक्ति और समाज के संबंधों से प्राप्त होती है” इस कथन को समझाइये।
4. समाजीकरण के प्रमुख अभिकरणों का उल्लेख कीजिए।

पुस्तक - 1 समाज का बोध

अध्याय-1

समाज में सामाजिक संरचना, स्तरीकरण और सामाजिक प्रक्रियाएँ

स्मीणीय बिन्दु :

- 'सामाजिक संरचना' शब्द इस तथ्य को दर्शाता है कि समाज संरचनात्मक है।
- 'सामाजिक संरचना' शब्द का प्रयोग सामाजिक सम्बंधों, सामाजिक घटनाओं के निश्चित क्रमे लिए किया जाता है।
- मानव द्वारा समाज उस इमारत की तरह होता है जिसका प्रत्येक क्षण उन्हीं ईटों से पुनर्रचना होती है जिनसे उसे बनाया गया है।
- इमिल दुर्खाइम के अनुसार अपने सदस्यों की क्रियाओं पर सामाजिक प्रतिबंध लगाते हैं और व्यक्ति पर समाज के प्रभुत्व होता है।
- कार्ल मार्क्स ने भी संरचना की बाध्यता पर बल दिया है लेकिन वह मनुष्य की सृजनात्मकता को भी महन्वपूर्ण मानते हैं।
- सामाजिक स्तरीकरण से अभिप्राय समाज में समूहों के बीच संरचनात्मक असमानताओं के अस्तित्व से है, भौतिक अथवा प्रतीकात्मक पुरस्कारों की पहुँच से है।
- आधुनिक समाज धन तथा शक्ति की असमानताओं के कारण पहचाने जाते हैं।
- सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज उच्चता तथा निम्नता के आधार पर अनेक समूहों में बंट जाता है।
- स्तरीकरण की संकल्पना उस विचार को संदर्भित करती है जहाँ समाज का विभाजन एक निश्चित प्रतिमान के रूप में होता है, तथा यह संरचना पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। असमान रूप से बाँटे गये लाभ के बीच बुनियादि प्रकार है जिसका उपभोग विशेषाधिकार प्राप्त समूहों द्वारा तथा किया जाता है—
 1. **जीवन अवसर—** वह सभी भौतिक लाभ जो प्राप्तकर्ता के जीवन की गुणवत्ता को सुधारते हैं जैसे संपत्ति, आय, स्वास्थ्य, रोजगार, मनोरंजन आदि।
 2. **सामाजिक प्रस्थिति—** मान – सम्मान तथा समाज के अन्य व्यक्तियों के नजरों में उच्च स्थान।
 3. **राजनैतिक प्रभाव —** एक समूह द्वारा समूह अथवा समूहों पर प्रभुत्व जमाना।

समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाएँ

3. सामाजिक प्रक्रियाएँ
- सहयोगी – संतुलन व एकता में योगदान – उदाहरण प्रतिस्पर्धा
- असहयोगी – संतुलन व एकता में बाधा उदाहरण – संघर्ष

कार्ल मार्क्स और एमिल दुर्खाइम के अनुसार मनुष्यों को अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सहयोग होता है तथा अपने और अपनी दुनिया के लिए उत्पादन और पुनः उत्पादन करना पड़ता है।

प्रकार्यवादी परिप्रेक्ष्य का सरोकार मुख्य रूप से समाज में 'व्यवसाय की आवश्यकता' से है।

1. नए सदस्यों का समाजीकरण
 2. संचार की साझा प्रणाली
 3. व्यक्ति की भूमिका निर्धारण के तरीके
- समाज के विभिन्न भागों का एक प्रकार्य अथवा भूमिका होती है जो संपूर्ण समाज की प्रकार्यत्मकता के लिए जरूरी होता है।
 - प्रतियोगिता तथा संघर्ष को इस दृष्टि से भी समझा जाता है को अधिकतर स्थितियों में से बिना ज्यादा हानि तथा कष्ट के सुलझ जाते हैं तथा समाज की भी विभिन्न प्रकार से मदद करते हैं।
 - सहयोग, प्रतियोगिता एंव संघर्ष के आपसी संबंध अधिकतर जटिल होते हैं तथा ये आसानी से अलग नहीं किये जा सकते।

सहयोग तथा श्रम विभाजन

4. सहयोग – सामान्य उद्योग की प्राप्ति के लिए मिलकर किया गया कार्य जैसे – पारिवारिक कार्यों में हाथ बँटाना, राष्ट्र विपत्ति में जनता का सरकार को साथ देना।
- सहयोग का विचार मानव व्यवहार की कुछ मान्यताओं पर आधारित है :
 - मनुष्य के सहयोग के बिना मानव जाति के लिए अस्तित्व कठिन हो जाएगा।
 - जानवरों की दुनिया में भी हम सहयोग के प्रमाण देख सकते हैं।
- दुर्खाइम के अनुसार, एकता समाज का नैतिक बल है, तथा यह सहयोग और इस तरह समाज कि प्रकार्यों को समझने के लिए बुनियादी अवयव है।
- श्रम विभाजन की भूमिका जिसमें सहयोग निहित है, यथार्थ रूप में समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करती है।
- दुर्खाइम ने यान्त्रित तथा सावयवी एकता में अंतर स्पष्ट किया है –
 1. **यात्रिक एकता** – यह संहति का एक रूप है जो बुनियादी रूप से एकरूपता पर आधारित है। इस समाज के अधिकांश सदस्य एक जैसा जीवन व्यतीत करते हैं, कम से कम विशिष्टता अथवा श्रम – विभाजन को हमेशा आयु तथा से जोड़ा जाता है।
 2. **सावयवी एकता** – यह सामाजिक संहति का वह रूप है जो श्रम विभाजन पर आधारित है तथा जिसके फलस्वरूप समाज के सदस्यों में सह निर्भरता है।
- मनुष्य केवल सहयोग के लिए समायोजन तथा सामंजस्य ही नहीं करते हैं बल्कि इस प्रक्रिया में समाज को बदलते भी हैं। जैसे – भारतीयों को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अनुभव के कारण अंग्रेजी भाषा के साथ समायोजन, सामंजस्य तथा सहयोग करना पड़ा था।

- **अलगाव** – इस धारणा का प्रयोग मार्क्स द्वारा श्रमिकों का अपने श्रम तथा उत्पादों पर किसी प्रकार के अधिकार न होने के लिए किया जाता है। इससे श्रमिकों की अपने कार्य के प्रति रुचि समाप्त होने लगती है।
- **प्रतिस्पर्धा** – यह विश्वव्यापी और स्वभाविक क्रिया है जिसमें व्यक्ति दूसरे को नुकसान पहुँचाए बिना आगे बढ़ना चाहता है। यह व्यक्तिगत प्रगति में सहायता करती है। यह निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।

प्रतियोगिता – अवधारणा एंव व्यवहार के रूप में

- **प्रतियोगिता** – एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत दो या अधिक व्यक्तियों का एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयास है।
- हमारे समाज में वस्तुओं की संख्या कम होती है और प्रत्येक व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण रखने में असमर्थ रहता है। अर्थात् जब वस्तुओं की संख्या कम हो और उसको प्राप्त करने वालों की संख्या अधिक हो तो प्रतियोगिता करी प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है। आर्थिक, सामाजिक धार्मिक, राजनितिक अर्थात् प्रत्येक क्षेत्र प्रतियोगिता के ऊपर ही आधारि है।
- फेयर चाइल्ड के अनुसार प्रतियोगिता सीमित वस्तुओं के उपभोग या अधिकार के लिए किये जाने वाले प्रयत्नों को कहते हैं।
- **पूँजीवाद** – वह आर्थिक व्यवस्था, जहाँ पर उत्पादन के साधनों पर व्यक्तिगत अधिकार होता है, जिसे बाजार व्यवस्था में लाभ कमाने के लिए प्रयोग किया जाता है जहाँ श्रमिकों द्वारा श्रम किया जाता है।
- आधुनिक पूँजीवाद समाज जिस प्रकार कार्य करते हैं वहाँ दोनों (व्यक्तिगत तथा प्रतियोगिता) का एक साथ विकास सहज है। पूँजीवाद की मौलिक मान्यताएँ हैं।
 1. व्यापार का विस्तार
 2. श्रम विभाजन – कार्य का विशिष्टीकरण, जिसकी सहायता से अलग – अलग रोजगार उत्पादन प्रणाली से जुड़े होते हैं।
 3. विशेषीकारण
 4. बढ़ती उत्पादकता
- प्रतियोगिता की विचारधारा पूँजीवाद की सशक्त विचारधारा का तर्क है कि बाजार इस प्रकार से कार्य करता है कि अधितम कार्यकुशलता सुनिश्चित हो सके।
- प्रतियोगिता, पूँजीवाद के जन्म के साथ ही प्रयत्न इच्छा के रूप में फूली – फली।

संघर्ष तथा सहयोग

- **संघर्ष** – हितों में टकराहट को संघर्ष कहते हैं। संघर्ष किसी भी समाज का एक महत्वपूर्ण हिस्सा सदैव रहा है
- संसाधनों की कमी समाज में संघर्ष उत्पन्न करती है क्योंकि संसाधनों को पाने तथा उस पर कब्जास करने के लिए प्रत्येक समूह संघर्ष करता है।
- संघर्ष विभिन्न प्रकार के होते हैं
 1. नस्ली संघर्ष

2. वर्ग संघर्ष
 3. जाति संघर्ष
 4. राजनीतिक संघर्ष
 5. अन्तर्राष्ट्रीय संघर्ष
 6. निजी संघर्ष
- समाज संघर्ष एंव सहयोग दोनों तत्वों के मिश्रण के साथ ही विकसित होता है, जहाँ समाज में एक तरफ प्रेम और सहयोग की भावना होती है वहाँ दूसरी तरफ नफरत, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि की भावना उत्पन्न होती है।
 - परहितवाद – बिना किसी लाभ के दूसरों के हित के लिए काम करना परहितवाद कहलाता है।
 - मुक्त व्यापार / उदारवाद – वह राजनैतिक तथा आर्थिक नजरिया, जो इस सिद्धांत पर आधारित है कि सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था में अहस्तक्षेप नीति अपनाई जाए तथा बाजार एंव संपत्ति मालिकों को पूरी छूट दे दी जाए।
 - सामाजिक बाध्यता – हम जिस समूह अथवा समाज के भाग होते हैं वह हमारे व्यवहार पर प्रभाव छोड़ते हैं। दुर्खाइम के अनुसार सामाजिक बाध्यता सामाजिक तथ्य का एक विशिष्ट लक्षण है।

सहयोग	संघर्ष
1. सहयोग अर्थात् साथ देना	1. संघर्ष शब्द का अर्थ है हितों में टकराव अर्थात् सहयोग न करना।
2. अवैयकितक होता है।	2. व्यक्तिगत होता है।
3. निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।	3. अनिरंतर प्रक्रिया है
4. अहिंस रूप है।	4. हिंसक रूप है।
5. सामाजिक नियमों का पालन होता है।	5. सामाजिक नियमों का पालन नहीं होता।

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक स्तरीकरण से आप क्या समझते हैं ?
2. 'अलगाव' से क्या तात्पर्य है ?
3. सामाजिक संरचना से क्या आशय है ?
4. परहितवाद क्या है ?
5. श्रम विभाजन से क्या तात्पर्य है ?
6. मुक्त व्यापार क्या है ?
7. सामाजिक बाध्यता से क्या तात्पर्य है ?
8. संघर्ष से आप क्या समझते हैं ?
9. प्रतियोगिता से क्या तात्पर्य है ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. कार्ल मार्क्स के सहयोग संबंधी विचारों का उल्लेख कीजिए।
2. यांत्रिक और सावयवी एकता में अन्तर स्पष्ट कीजिए।
3. विशेषाधिकारी प्राप्त समूहों द्वारा उपभोग किये जाने वाले तीन प्रमुख लाभों का उल्लेख कीजिए।
4. संघर्ष के विभिन्न प्रकारों को उदाहरण सहित समझाइये।

6 अंक वाले प्रश्न

1. समाजशास्त्र में सामाजिक प्रक्रियाओं को समझने के दो तरीके स्पष्ट कीजिए।
2. मनुष्य केवल सहयोग के लिए समायोजन तथा सामंजस्य हि नहीं करते बल्कि इस प्रक्रिया में समाज को बदलते भी हैं – समझाइये।
3. “प्रतियोगिता की विचारधारा पूँजीवाद की सशक्त विचारधारा है” इस कथन को स्पष्ट कीजिए।
4. प्रतियोगिता, सहयोग और संघर्ष के आपसी सहसंबंधी सहित समझाइये।

अध्याय-2

ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन सामाजिक व्यवस्था

स्मरणीय बिन्दु :

- **सामाजिक परिवर्तन:** यह वे परिवर्तन हैं जो कुछ समय बाद समाज की विभिन्न इकाइयों में भिन्नता लाते हैं और इस प्रकार समाज द्वारा मानव संस्थाओं, प्रतिमानों, संबंधों, प्रक्रियाओं, व्यवस्थाओं आदि का स्वरूप पहले जैसा नहीं रह जाता है, यह हमेशा चलने वाली प्रक्रिया है।
- **आंतरिक परिवर्तन :** किसी युग में आदर्श तथा मुल्य में यदि पिछले युग के मुकाबले कुछ नयापन दिखाई पड़े तो उसे आंतरिक परिवर्तन कहते हैं।
- **बाह्य परिवर्तन या संरनात्मक परिवर्तन :** यदि किसी सामाजिक अंग जैसे परिवार, विवाह, नातेदारी, वर्ग, जातीय स्तान्तरण, समूहों के स्वरूपों तथा आधारों में परिवर्तन दिखाई देता है उसे बाह्य परिवर्तन कहते हैं।

सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया के स्वरूप

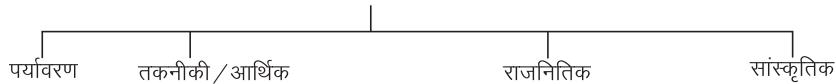
उद्विकास : परिवर्तन जब धीरे – धीरे सरल जटिल की ओर होता है तो उसे 'उद्विकास' कहते हैं।

- **चार्ल्स डार्विन का उद्विकासीय सिद्धान्त :**
 1. डार्विन के अनुसार आरम्भ में प्रत्येक जीवित प्राणी सरल होता है।
 2. कई शताब्दियों अथवा कभी – कभी सहस्राब्दियों में धीरे – धीरे अपने आपको प्राकृतिक वातावरण में ढालकर मनुष्य बदलते रहते हैं।
 3. डार्विन के सिद्धान्त ने 'योग्यतम्' की उत्तरजीविता – के विचार पर बल दिया। केवल वही जीवधारी रहने में सफल होते हैं जो अपने पर्यावरण के अनुरूप आपको ढाल लेते हैं, जो अपने आपको ढालने में सक्षम नहीं होते अथवा ऐसा धीमी गति से करते हैं, लंबे समय में नष्ट हो जाते हैं।
 4. डार्विन का सिद्धान्त प्राकृतिक प्रक्रियाओं को दिखाता है।
 5. इसे शीघ्र सामाजिक विश्व में स्वीकृत किया गया जिसने अनुकूली परिवर्तन में महत्ता पर बल दिया।
- (ख) **क्रांतिकारी परिवर्तन :** परिवर्तन जो तुलनात्मक रूप से शीघ्र अथवा अचानक होता है। इसका प्रयोग मुख्यतः राजनीतिक संदर्भ में होता है। जहाँ पूर्व सत्ता वर्ग को विस्थापित कर लाया जाता है। जैसे – फ्रांसीसी क्रांति, 1917 की रूसी क्रांति अथवा औद्योगिक क्रांति, संचार क्रांति आदि।
- **मूल्यों तथा मान्यताओं में परिवर्तन : (उदाहरण – बाल श्रम)**
 1. 19वीं शताब्दी के अंत में यह माना जाने लगा कि बच्चे जितना जल्दी हो काम पर लग जाएँ। प्रारंभिक फैकट्री व्यवस्था बच्चों के श्रम पर आश्रित थी। बच्चे

पाँच अथवा छह वर्ष की आयु से ही काम प्रारंभ कर देते थे।

2. 20वीं शताब्दी के दौरान अनेक देशों ने बाल श्रम को कानून द्वारा बंद कर दिया।
3. यद्यपि कुछ ऐसे उद्योग हमारे देश में हैं जो आज भी श्रम पर कम—से—कम आंशिक रूप से आश्रित हैं। जैसे दरी बुनना, छोटी चाय की दुकानें, रेस्टराँ, माचिस बनाना इत्यादि।
4. बाल श्रम गैर कानूनी है तथा मालिकों को मुजरिमों के रूप में सजा हो सकती है।

सामाजिक परिवर्तन के प्रकार के स्त्रोत अथवा कारण :



- **पर्यायवरण तथा / और सामाजिक परिवर्तन**

1. पर्यायवरण सामाजिक परिवर्तन लाने में एक प्रभावकारी कारक है।
2. भौतिक पर्यायवरण सामाजिक परिवर्तन को एक गति देता है। मनष्य प्रकृति के प्रभावों को रोकने अथवा झेलने में अक्षम था। उदाहरण के लिए — मरुस्थलीय वातावरण में रहने वाले लोगों के लिए एक स्थान पर रहकर कृषि करना संभव नहीं था, जैसे मैदानी भागों अथवा नदियों के किनारे। नदी या समुद्र के समीप नगरों का विस्तार बड़े पैमाने पर होता है क्योंकि व्यावसायिक गतिविधियों को गति देने के लिए समुद्री या जल मार्ग यातायात अधिक सुविधाजनक और सस्ता पड़ता है।
3. भौगोलिक पर्यायवरण या प्रकृति समाज को पूर्णरूपेण बदलकर रख देते हैं। ये बदलाव अपरिवर्तनिय होते हैं अर्थात् ये स्थायी होते हैं अर्थात् ये स्थायी हैं तथा वापस अपनी पूर्वस्थिति में नहीं आने देते हैं।
उदाहरण — प्राकृतिक आपदाएँ जैसे भूकम्प, बाढ़, तूफान, सूखा, अकाल, महामारी आदि।

- **तकनीक / अर्थव्यवस्था और सामाजिक परिवर्तन**

1. भौतिक उद्योगों की पूर्ति के लिए व्यक्ति जिस उन्नत प्रविधि का प्रयोग करते हैं, उसी को प्राद्योगिकी कहते हैं। जैसे — बल्ब, पहिया, वाष्प इंजन, रेलगाड़ी उपकरण, आदि जिनसे उत्पादन प्रणाली और अर्थव्यवस्था में भारी बदलाव आया तथा सामाजिक परिवर्तन हुआ।
2. तकनीकी क्रांति से औद्योगिकरण, नगरीकरण, उदारीकरण, जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा मिला। उदाहरण — ब्रिटेन के कपड़ा उद्योग में होने वाले तकनीकी प्रयोग। नवीन सूत कातने तथा बुनने की मशीनों ने भारतीय उपमहाद्वीपों से हथकरघा को नष्ट कर दिया जो पुरी दुनिया में सबसे व्यापक तथा उच्चस्तरीय था।
3. कई बार आर्थिक व्यवस्था में होने वाले परिवर्तन जो प्रत्यक्षः तकनीकी नहीं

होते हैं, भी समाज को बदल सकते हैं। उदाहरण – रोपण कृषि, जहाँ बड़े पैमाने पर नकदी फसलों जैसे – गन्ना, चाय, कपास की खेती की जाती है, ने श्रम के लिए भारी माँग उत्पन्न की।

4. 17वीं से 19वीं शताब्दी में दासों का व्यापार प्रारम्भ किया हुआ।

- **राजनीतिक और सामाजिक परिवर्तन**

1. राजनीतिक शक्ति ही सामाजिक परिवर्तन का कारण रही है।
2. विश्व के इतिहास में ऐसे अनेक उदाहरण हैं जब कोई देश से युद्ध में विजयी होता था तो उसका पहला काम वहाँ की सामाजिक व्यवस्था को दुरुस्त करना होता है। अपने शासनकाल के दौरान अमेरीका ने जापान में भूमि सुधार और औद्योगिक विकास के साथ-साथ अनेक परिवर्तन हुआ।
3. राजनीतिक परिवर्तन हमें केव अन्तराष्ट्रीय पटल ही नहीं अपितु हम अपने देश में भी देख सकते हैं। उदाहरण –
- भारत का ब्रिटिश शासन को बदल डालना एक निर्णायक सामाजिक परिवर्तन था।
- वर्ष 2006 में नेपाली जनता ने नेपाल में “राजतंत्र” शासन व्यवस्था को ठुकरा दिया।
- “सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार” राजनीतिक परिवर्तन के इतिहास में अकेला सर्वाधिक बड़ा परिवर्तन है।
- सार्वभौमिक वयस्क मताधिकारी अर्थात् 18 या 18 वर्ष से ज्यादा उम्र के व्यक्तियों को मत देने का अधिकार है।

- **संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन**

1. व्यक्ति के क्षवहारों या कार्यों में जब बदलाव आता है तो जीवन में सांस्कृतिक परिवर्तन होता है।
2. सामाजिक – सांस्कृतिक संरक्षण पर धर्म का प्रभाव विशेष से देखने में आता है। उदाहरण – प्राचीन भारत के साजिक तथा राजनीतिक जीवन पर बौद्ध धर्म का प्रभाव।
3. धार्मिक मान्यताएँ तथा मानदंडों ने समाज को व्यवस्थित करने में मदद दी तथा यह बिल्कुल आश्चर्यजनक नहीं है कि इन मान्यताओं में परिवर्तन ने समाज को बदलने में मदद की।
4. समाज में महिलाओं की स्थिति को सांस्कृतिक उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है जैसे – द्वितीय विश्वयुद्ध के समय पाश्चात्य देशों में महिलाओं ने कारखानों में काम करना प्रारंभ कर दिया जो पहले कभी नहीं हुआ, महिलाएँ जहाज बना सकती थी, भारी मशीनों को चला सकती थी, हथियार आदि का निर्माण कर सकत थीं।

सामाजिक व्यवस्था

1. सामाजिक परिवर्तन को सामाजिक व्यवस्था के साथ ही समझा जा सकता है।

सामाजिक व्यवस्था तो एक व्यवस्था में एक प्रवृत्ति होती है जो परिवर्तन का विरोध करती है तथा उसे नियमित करती है।

2. सामाजिक व्यवस्था का अर्थ है किसी विशेष प्रकार के सामाजिक संबंधों, मूल्यों तथा परिमापों को तीव्रता से बनाकर रखना तथा उनको दोबारा बनाते रहना।
3. सामाजिक व्यवस्था को दो प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है—
 - (1) समाज में सदस्य अपनी इच्छा से नियमों तथा मूल्यों के अनुयसार कार्य करें।
 - (2) लोगों को अलग—अलग ढंग से इन नियमों तथा मूल्यों को मानने के लिए बाध्य किया जाए।
 - (3) प्रत्येक समाज सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखने के लिए इन दोनों प्रकारों के मिश्रण का प्रयोग करता है।
4. सामाजिक व्यवस्था — प्रभाव, सत्ता, असहमति, अपराध, हिंसा, सहयोग तथा असहयोग प्रदान करने वाले तत्व।

प्रभाव, सत्ता तथा कानून

1. मनुष्य की क्रियाएँ मानवीय संरचना के अनुसार ही होती हैं। हर समूह में सत्ता के तत्व मूल रूप से विमान रहते हैं। संगठित समूह में कुछ साधारण सदस्य होते हैं और कुछ ऐसे सदस्य होते हैं जिनके पास जिम्मेदारी होती है उनके पास ही सत्ता भी होती है। प्रभुत्ता का दूसरा नाम शक्ति है।
2. मैक्स बेवर के अनुसार, समाज में सत्ता विशेष रूप से आर्थिक आधारों पर ही आधारित होती है यद्यपि आर्थिक कारक सत्ता के निर्माण में एकमात्र नहीं कहा जाता है। जैसे उत्तर भारत की प्रभुत्ता सम्पन्न जातियाँ।
3. सत्ता, प्रभाव तथा कानून से गहरे रूप से संबंधित है।
 - कानून नियमों की एक व्यवस्था है जिसके द्वारा समाज में सदस्यों को नियंत्रित तथा उनके व्यवहारों को नियमित किया जाता है।
 - प्रभुत्व की धारणा शक्ति से संबंधित है तथा शक्ति सत्ता में निहित होती है।
 - सत्ता का एक महत्वपूर्ण कार्य कानून का निर्माण करना तथा तथा शक्ति सत्ता में निहित होती है।

4. सत्ता के प्रकार
 - परम्परात्मक सत्ता — जो परम्परा से प्राप्त हो
 - कानूनी सत्ता — जो कानून से प्राप्त हो
 - करिश्मात्मक सत्ता — पीर, जादूगर, कलाकार, धार्मिक गुरुओं को प्राप्त सत्ता

अपराध तथा हिंसा

- अपराध वह कार्य होता है जो समाज में चल रहे प्रतिमानों तथा आदर्शों के विरुद्ध किया जाए। अपराधी वह व्यक्ति होता है जो समाज द्वारा स्थापित नियमों के विरुद्ध कार्य करता है। जैसे युवाओं में पाई जाने वाली दोहरी संस्कृति, वस्त्रों के

फैशन से लेकर जीवनशैली तक।

- अपराध से समाज में विघटन आता है क्योंकि अपराध समाज तथा सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध किया गया कार्य है।
- हिंसा सामाजिक व्यवस्था को शत्रु है तथा विरोध का उग्र रूप है जो मात्र कानून की ही नहीं बल्कि महत्वपूर्ण सामाजिक मानदंडों का भी अतिक्रमण करती है। समाज में हिंसा सामाजिक तनाव का प्रतिफल है तथा गंभीर समस्याओं की उपस्थिति को दर्शाती है। यह राज्य की सत्ता को चुनौती भी है।

ग्रामीण तथा नगरीय समाज में सामाजिक परिवर्तन तथा युवा वर्ग में बढ़ते अपराध और हिंसा व्यवस्था के कारण :

1. बढ़ती हुई महंगाई
2. बेरोजगारी
3. बदले की भावना
4. फिल्मों का प्रभाव
5. नशा
6. लोगों में भय पैदा करना

गाँव कस्बों और नगरों में सामाजिक व्यवस्था का परिवर्तन

- गाँव – जिस भौगोलिक क्षेत्र में जीवन कृषि पर आधारित होता है, जहाँ प्राथमिक संबंधों की भरमार होती है तथा जहाँ कम जनसंख्या के साथ सरलतास होती है उसे गाँव कहते हैं।
- कस्बा – कस्बे को नगर का छोटा रूप कहा जाता है जो क्षेत्र से बड़ा होता है परंतु नगर से छोटा होता है।
- नगर – नगर वह भौगोलिक क्षेत्र होता है जहाँ लोग कृषि के स्थान पर अनेक प्रकार के कार्य करते हैं। जहाँ द्वितीयक संबंधों की भरमार होती है। तथा अधिक जनसंख्या के साथ जटिल संबंध भी पाये जाते हैं।
- नगरीकरण – यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें जनसंख्या का बड़ा भाग को छोड़कर नगरों एंव कस्बों की ओर पलायन करना है।
- आर्थिक तथा प्रशासनिक शब्दों में ग्रामीण तथा नगरीय बनावट कि दो मुख्य आधार हैं—
 1. जनसंख्या का घनत्व 2. कृषि

ग्रामीण तथा नगरीय समुदायों में अन्तर

ग्रामीण क्षेत्र	नगरीय क्षेत्र
1. गाँव का आकार छोटा होता है। 2. सम्बन्ध व्यक्तिगत होते हैं। 3. सामाजिक संस्थाएं जैसे – जाति, धर्म, प्रथाएं अधिक प्रभावशाली हैं।	1. गाँव का आकार बड़ा होता है। 2. व्यक्तिगत सम्बन्ध होते हैं। 3. सामाजिक संस्थाएं जैसे – जाति, धर्म, प्रथाएं अधिक प्रभावशाली नहीं हैं।

ग्रामीण क्षेत्र	नगरीय क्षेत्र
4. सामाजिक परिवर्तन धीमा है।	4. सामाजिक परिवर्तन तीव्र है।
5. जनसंख्या का घनत्व कम है	5. जनसंख्या का घनत्व ज्यादा है
6. मुख्य व्यवस्था कृषि है	6. कृषि के अलावा सभी व्यवसाय हैं।

ग्रामीण क्षंत्र और सामाजिक परिवर्तन

1. संचार के नए साधनों के परिवर्तन अतः सांस्कृतिक पिछड़ापन न के बराबर।
2. भू – स्वामित्व में परिवर्तन – प्रभावी जातियों का उदय।
3. प्रबल जाति – जो आर्थिक, सामाजिक तथा राजनितिक समाज में शक्तिशाली।
4. कृषि की तकनीकी प्रणाली में परिवर्तन, नई मशीनरी के प्रयोग ने जर्मिंदार तथा मजदूरों के बीच की खाई को बढ़ाया।
5. कृषि की कीमतों में उतार – चढ़ाव, सूखा तथा बाढ़ किसानों को आत्महतया करने पर मजबूर कर दिया।
6. निर्धन ग्रामीणों के विकास के लिए सरकार ने 2005 में राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार योजना अधिनियम कार्यक्रम शुरू किया।

नगरीय क्षेत्र और सामाजिक परिवर्तन

1. प्राचीन नगर अर्थव्यवस्था को सहारा देते थे।
उदाहरण – जो नगर पत्तन और बंदरगाहों के किनारे बसे थे व्यापार की दृष्टि से लाभ की स्थिति में थे।
(2) धार्मिक स्थल जैसे राजस्थान में अजमेर, उत्तर प्रदेश में वाराणसी अधिक प्रसिद्ध थे।
2. जनसंख्या का घनत्व अधिक होने से निम्नलिखित समस्याएं उत्पन्न होती हैं –
— असवास, बेरोजगारी, अपराध, जनस्वास्थ्य, गंदी बस्तियाँ, गंदगी, (सफाई, पानी, बिजली का अभाव), प्रदूषण।
3. नगरीय परिवहन – सरकारी परिवहनों की बजाय निजी संसाधनों का प्रयोग जिससे ट्रैफिक तथा प्रदूषण की समस्याएँ उत्पन्न होती हैं।
पृथक्कीकरण – यह एक प्रक्रिया है जिसमें समूह, प्रजाती, नृजाति, धर्म तथा अन्य कारकों द्वारा विभाजन होता है।
घैटोकरण या बस्तीकरण – समान्यतः यह शब्द मध्य यूरोपीय शहरों में यहूदियों की बस्ती के लिए प्रयोग किया जाता है। आज के सन्दर्भ में यह विशिष्ट धर्म, नृजाति, जाति या समाज पहचान वाले लोगों के साथ रहने को दिखाता है। घैटोकरण की प्रक्रिया में मिश्रित विशेषताओं वाले पड़ोये स्थान पर एक समुदाय पड़ोस में बदलाव का होना है।
समूह संक्रमण – शहरों में आवागमन का साधन जिसमें बड़ी संख्या में लोगों का आना जाना होता है जैसे मैट्रो

2 अंक वाले प्रश्न

1. सामाजिक परिवर्तन से आप क्या समझते हैं ?

2. सामाजिक परिवर्तन के स्वरूप कौन – कौन से है ?
3. उद्दिकास किसे कहते हैं ?
4. सामाजिक परिवर्तन के कारक कौन – कौन से हैं ?
5. प्राणिशास्त्रीय उद्दिकास के सिद्धान्त का संबंध किस मानवशील से है।
6. कुछ प्राकृतिक आपदाओं के नाम लिखिए।
7. तकनीक / प्रौद्योगिकी से आप क्या समझते हैं ?
8. प्रौद्योगिक क्रांति से किन – किन क्षेत्रों को बढ़ावा मिला ?
9. सामाजिक परिवर्तन का उदाहरण दीजिए तो तकनीकी परिवर्तन द्वारा लाया गया।
10. 17वीं – 19वीं शताब्दी में जिस नकदी फसलों ने श्रम के लिए भारी मँग उत्पन्न की, उनके नाम बताइए।
11. “सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार” किसे कहते हैं ?
12. संस्कृति किसे कहते हैं ?
13. सामाजिक व्यवस्था क्या है ?
14. “प्रभुता” से आप क्या समझते हैं ?
15. “सत्ता” किसे कहते हैं ?
16. “शक्ति” किसे कहते हैं ?
17. “कानून” की परिभाषा दिजिए।
18. “अपराध” से आप क्या समझते हैं ?
19. विश्वभर के समाजों को उनकी सामाजिक संरचना, संगठन एंव व्यवस्था के आधार पर किन दो भागों में विभाजित किया गया है ?
20. संरचनात्मक परिवर्तन से आप क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. “पर्यावरण” सामाजिक परिवर्तन का एक प्रमुख कारक हैं। संक्षेप में बताइए।
2. डार्विन के प्राणिशास्त्रीय उद्दिकास के सिद्धान्त को समझना क्या आवश्यक है ?
3. नगरीकरण ने किन – किन समस्याओं को जन्म दिया है ? संक्षेप में बताइए।
4. भारत में किसानों द्वारा की गई आत्मकथा पर चर्चा कीजिए।
5. “प्रभावी जातियाँ आर्थिक दृष्टि से बेहद शक्तिशाली हो गई हैं।” इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
6. “पत्तन और बंदरगाहों के किनारे बसे नगर लाभ की स्थिति में थे।” इस कथन को समझाइए।
7. भारत में विभिन्न धर्मों के बीच सांप्रदायिक तनाव को उदाहरण सहित समझाइए।
8. “जब परिवहन के साथ सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं।” इस कथन को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।

9. “बाल श्रम की उदाहरण सहित चर्चा किजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. अपराध क्या है ? एक कृत्य कब अपराध माना जाता है ?
2. “सत्ता की अवधारणा को स्पष्ट किजिए। यह प्रभुता तथा कानून से किस प्रकार संबंधित है ?
3. हिंसा क्या है ? हिंसा की उत्पत्ति के कारणों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
4. ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था तथा उनमें हुए सामाजिक परिवर्तनों का वर्णन कीजिए।
5. नगरीय सामाजिक व्यवस्था तथा उनमें हुए सामाजिक परिवर्तनों पर संक्षेप में प्रकाश डालिए।
6. “नगरीय जीवन तथा आधुनिकता दोनों एक ही सिक्कें के दो पहलू हैं।” इस कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।
7. गाँव, कस्बा तथा नगर एक – दूसरे से किस प्रकार भिन्न हैं ?
8. आधुनिक समाज में सामाजिक – सांस्कृतिक परिवर्तन के परिणामों की चर्चा कीजिए।

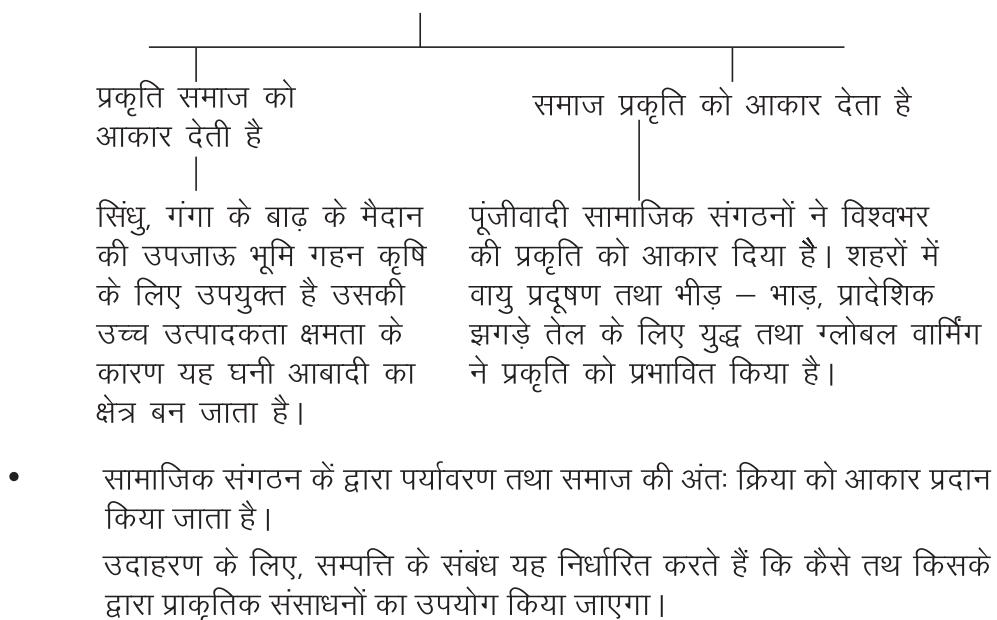
अध्याय-3

पर्यावरण और समाज

स्मरणीय बिन्दु :

- पर्यावरण : हम जिस वातावरण और परिवेश के चारों ओर से घिरे हैं उसे पर्यावरण कहते हैं।
- मुख्यतः पर्यावरण दो प्रकार का होता है :
 - प्राकृतिक पर्यावरण
 - मानव द्वारा निर्मित पर्यावरण
- पारिस्थितिकी शब्द का अर्थ एसे जाल से है जहाँ भौतिक और जैविक व्यवस्थाएँ तथा प्रक्रियाएँ घटित होती हैं तथा मनुष्य भी इसका एक अंग होता है। नदियाँ, पर्वत, सागर, मैदान, जीव – जंतु सभी पारिस्थितिक अंग हैं।
- वह विज्ञान जो पर्यावरण तथा जीवित वस्तुओं के बीच के संबंधों का अध्ययन करता है उसे सामाजिक पारिस्थितिकी कहते हैं।
- वह परितंत्र जिसका हिस्सा पशु, पौधे तथा पर्यावरण होते हैं, पारिस्थितिकी तंत्र कहलाता है।
- सामाजिक पर्यावरण का उद्भव जैव – भौतिक पारिस्थितिक तथा मनुष्य के हस्तक्षेप की अंतः क्रिया के द्वारा होता है। यह दो – तरफा प्रक्रिया है जिस प्रकार समाज को आकार देती है, ठीक उसी प्रकार से समाज भी प्रकृति को आकार देता है।

दो तरफा प्रक्रिया



- पर्यावरण तथा समाज के संबंध उसके सामाजिक मूल्यों तथा प्रतिमानों के अतिरिक्त उनके ज्ञान की व्यवस्थ में भी प्रतिबंधित होते हैं।
 - हम जोखिम भरे समाज में रहते हैं जहां ऐशी तकनीकी तथा वस्तुओं का प्रयोग करे हैं जिसके बारे में हम उदाहरणों से समझा सकते हैं।
- यदि वनों पर सरकार का अधिकार है तो यह अधिकार सरकार पर ही होगा कि वह यह निर्णय ले कि वनों को किसी कम्पनी को लीज पर दें अथवा ग्रामीणों को वन्य उत्पादों को इकट्ठा करने का अधिकार दे।
 - नाभिकिय विषय — जैसे भोपाल की औद्योगिक दुर्घटना तथा यूरोप में फैली मैडकाऊ बीमारी दर्शाती है कि हम जोखिम भरे समाज में रहते हैं।

पर्यावरण की प्रमुख समस्याएँ ओर जोखिम

- संसाधनों की क्षीणता — अस्वीकृत प्राकृतिक संसाधनों का प्रयोग करना पर्यावरण की एक गंभीर समस्या है। भूजल के स्तर में लगातार कमी इसका एक उदाहरण है।
 - प्रदूषण — पर्यावरण प्रदूषण आज के समय में एक बहुत बड़ी समस्या बनता जा रहा है। वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इत्यादि ऐसे प्रदूषण हैं जिन्होंने हमारे प्रदूषण को इतना दूषित कर दिया है कि शुद्ध वायु और जल का मिलना असंभव हो गया है।
 - वैश्विक तापमान वृद्धि प्रदूषण की सबसे बड़ी समस्या हमारे सामने आ रही है वैश्विक तापमान वृद्धि के रूप में विश्वव्यापी तापीकरण के कारण हमारा पर्यावरण उलट — पलट हो गया है। अधिक गर्मी हो रही है जिससे ध्रुवों की बर्फ पिघल रही है तथा महासागरों में पानी की मात्रा बढ़ रही है। इससे कई द्वीपों के डूबने का खतरा उत्पन्न हो गया है।
 - जैनेटिकल मोडिफाइड आर्गेनजम्स — वैज्ञानिक जीन स्पेलिसिंग की नई तकनीकों के द्वारा एक क्रेस्म के गुणों को दूसरी क्रिस्म में डालते हैं ताकि बेहतरीन गुणों से भरपूर वस्तु का निर्माण किया जा सके।
- उदाहरण — बैसिलस के जीन को कपास की प्रजातियाँ में डाला गया है।
- प्राकृतिक तथा मानव निर्मित पर्यावरण विनाश।
 - प्राकृतिक आपदा उदाहरण — सुनामी।
 - मानव निर्मित आपदास — भोपाल औद्योगिक दुर्घटना।

पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं

- पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी हैं क्योंकि पर्यावरण प्रत्यक्ष रूप से समाज को प्रभावित करता है। मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए पर्यावरण को काफी समय से प्रदूषित करता आ रहा है तथा प्राकृतिक संसाधनों का दोहन करता आ रहा है। मनुष्यों के इन कृत्यों के कारण ही प्रकृति विनाश की तरफ बढ़ रही है तथा मनुष्य को प्रकार की पर्यावरण संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

पर्यावरण से संबंधित कुछ विवादास्पद मुद्दे

- चिपको आन्दोलन
- नर्मदा बचाओं आंदोलन
- भोपाल औद्योगिक दुर्घटना

पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता

- पर्यावरण के संरक्षण की बहु आवश्यकता है क्योंकि जीवन जीने के लिए पर्यायवरण सबसे महत्वपूर्ण कारण है। अगर तथा वायु प्रदूषित हो गये तो हे स्वस्थ जीवन नहीं जी पायेंगे और भावी पीढ़ी के लिए प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो जाएगी।

ग्रीन हाउस

- पौधों की जलवायु को अधिक ठंड से बचाने के लिए ढका हुआ ढांचा जिसे हरितगृह भी कहते हैं। इसमें बाहर की तुलना में अंदर का तापमान अधिक होता है।

प्रदूषण के प्रकार :-

- 1) वायु प्रदूषण – उद्योगों तथा वाहनों से निकलने वाली जहरीली गैसें तथा घरेलू उपयोग के लिए लकड़ी तथा कोयले को जलाने से।
- 2) जल प्रदूषण – घरेलू नालियाँ, फैक्ट्री से निकलने वाले व्यर्थ पदार्थ, नदियों तथा जलाशयों में नहाना तथा कूड़ा कर्कट डालना।
- 3) ध्वनि प्रदूषण – लाउडस्पीकर, वाहनों के हार्न, यातायात के साधनों का शोर, मनोरंजन के साधनों से निकलने वाली आवाजें, पटाखे आदि।
- 4) भूमि प्रदूषण – खेतों में कीटनाशक दवाओं, रसायनिक खादों का प्रयोग, शहरी कूड़ा कर्कट, सीवरेज, तेजाबी वर्षा से रसायनिक पदार्थों का मिट्टी में मिलना।
- 5) परमाणु प्रदूषण – परमाणु परीक्षण से निकलने वाली किरणें।

2 अंक वाले प्रश्न

1. पारिस्थितिक क्या है ?
2. सामाजिक पारिस्थितिक से आप क्या समझते है ?
3. पर्यावरण क्या होता है ?
4. प्राकृतिक और सामाजिक पर्यावरण मे क्या अंतर है?
5. जल प्रदूषण क्या है ?
6. विश्व तापीकरण से क्या तात्पर्य है ?
7. ग्रीन हाउस का क्या अर्थ है ?
8. पर्यावरण प्रदूषण से आप क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. उस दोहरी प्रक्रिया का वर्णन करें जिसके कारण सामाजिक पर्यावरण का उद्भव हुआ ?

- c
2. सामाजिक संस्थाएँ कैसे तथा किस प्रकार से पर्यावरण तथा समाज के बापसी रिश्तों को आकार देती है ?
 3. “पर्यावरण की समस्याएँ सामाजिक समस्याएँ भी है” – स्पष्ट कीजिए।
 4. “पर्यावरण प्रदूषण के बहुत हानिकारक परिणाम हो सकते हैं” – इस कथन की व्याख्या करें।
 5. पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. पर्यावरण की प्रमुख समस्याओं का उल्लेख कीजिए।
2. पर्यावरण प्रबन्ध एक कठिन एक कठिन कार्य है – भोपाल औद्योगिक दुर्घटना का उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. “आज हम एक जोखिम भरे समाज में रहते हैं” – इस कथन को उदाहरणों सहित समझाइए।
4. पर्यावरण से संबंधित कुछ विवादास्पद मुद्दों का उल्लेख कीजिए।
5. पर्यावरण क्या है ? पर्यावरण का व्यक्ति के जीवन से क्या संबंध है ? स्पष्ट कीजिए।
6. विभिन्न प्रकार के प्रदूषण, उनके कारणों और रोकने के उपायों का उल्लेख कीजिए।

अध्याय-4

पाश्चात्य समाजशास्त्री - एक परिचय

- समाजशास्त्र के अनुभव में तीन क्रांतियों का महत्वपूर्ण हाथ है –
 - ज्ञानोदय अथवा विवेक का युग
 - फ्रांसीसी क्रांति, तथा
 - औद्योगिक क्रांति
- ज्ञानोदय
 - 17वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध व 18वीं शताब्दी के पश्चिमि यूरोप में संसार के बारे में सोचने – विचारने के बिलकुल नए व मौलिक दृष्टिकोण का जन्म हुआ। ज्ञानोदय या प्रबोधन के नाम से जाने गए इस नए दर्शन नक जहाँ एक तरफ मनुष्य को संपूर्ण ब्राह्मांडके केन्द्र बिन्दु के रूप में स्थापित किया, वहाँ दूसरी तरफ विवेक को मनुष्य को मनुष्य की मुख्य विशिष्टता का दर्जा दिया।
- इसका तात्पर्य यह है कि ज्ञानोदय को एक संभावना से वास्तविक यथार्थ में बदलने में उन वैचारिं प्रवृत्तियों का हाथ है जिन्हें आज 'धर्मनिरपेक्षण' वैज्ञानिक सोच 'व' मानवतावादी सोच' की संज्ञा देते हैं।
- इसे मानव व्यक्ति ज्ञान का पात्र की उपाधि भी दी गई के बल उन्हीं व्यक्तियों को पूर्ण रूप से मनुष्य माना गया जो विवेकपूर्ण ढंग से सोच – विचार कर सकते हो जो इस काबिल नहीं समझे गए उन्हें आदिमानव या बार्बर मानव कहा गया।
- फ्रांसीसी क्रांति (1789) ने व्यक्ति तथा राष्ट्र – राज्य के स्तर पर राजनितिक संप्रभुता के आगमन की घोषणा की।
 - मानवाधिकार के घोषणात्र ने सभी नागरीकों की समानता पर बल दिया तथा जन्मजात विशेषाधिकारों की वैधता पर प्रश्न उठाता है।
 - इसने व्यक्ति को धार्मिक अत्याचारी से मुक्त किया, जो फ्रांस की क्रांति के पहले वहाँ अपना वर्चस्व बनाए हुए था।
 - फ्रांसीसी क्रांति के सिद्धान्त – स्वतंत्रता, समानता तथा बंधुत्व – आधुनिक राज्य के नए नारे बने।

औद्योगिक क्रांति

- आधुनिक उद्योगों की नींव औद्योगिक क्रांति के द्वारा रखी गई, जिसकी शुरुआत में 18वीं साताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा 19वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुई।
- ब्रिटेन में 18वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में तथा 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में हुई।
- इसके दो प्रमुख पहलू थे
 1. पहला, विज्ञान तथा तकनीकी का औद्योगिक उत्पादन।
 2. दूसरा औद्योगिक क्रांति ने श्रम तथा बाजारद को नए दंश से व बड़े पैमाने पर संगठित करने के तरीके विकसित किए, जैसे कि पहले कभी नहीं गया।

3. औद्योगिक क्रांति के कारण सामाजिक परिवर्तन –
शहरी इलाकों में बसें हुए उद्योगों को चलाने के लिए मजदूरों की मँग को उन विस्थापित लोगों ने पूरा किया जो ग्रामीण इलाकों को छोड़, श्रम की तलाश में शहर आकर बस गए थे।
4. कम तनख्वाह मिलने के कारण अपनी जीविका चलाने के लिए पुरुषों और स्त्रियों को ही नहीं बल्कि बच्चों को भी लंबे समय तक खतरनाक परिस्थितियों में काम करना पड़ता था।
5. आधुनिक उद्योगों ने शहरों को देहात पर हावी होने में मदद की।
6. असधूकि शासन पद्धतियों के अनुसार राजतंत्र को नए प्रकार की जानकारी व ज्ञान की आवश्यकता महसूस हुई।

• **कार्ल मार्क्स**

- मार्क्स का कहना था कि समाज ने विभिन्न चरणों में उन्नति की है। ये चरण हैं आदिम साम्यवाद – दासता – सामुतवाद व्यवस्था – पूँजीवाद – समाजवाद उनका मानना था कि बहुत लंबी ही इसका स्थान समाजवाद ले लेना।
- पूँजीवाद समाज में मनुष्य से अपने आपको काफी अलग–अलग पाता है।
- परंतु फिर भी मार्क्स का यह मानना था कि पूँजीवाद, मानव इतिहास में एक आवश्यक तथा प्रगतिशील चरण रहा क्योंकि इसने ऐसा वातावरण तैयार किया जाक भविष्य में तथा प्रगतिशील चरण क्योंकि इसने ऐसा वातावरण तैयार किया जो समान अधिकारों की वकालत करने तथा शोषण और गरीबी को समाप्त करने के लिए आवश्यक है।
- अर्थव्यवस्था के बारे में मार्क्स की धारणा थी कि यह उत्पादन के तरीकों पर आधारित होती है। उत्पादन शक्तियों से तात्पर्य उत्पादन के उन सभी साधनों से है, जैसे – भूमि, मजदूर, तकनीक, ऊर्जा के विभिन्न साधन।
- मार्क्स ने आर्थिक संरचनाओं और प्रक्रियाओं पर अणिक बन दिया क्योंकि उनका विश्वास था कि मानव इतिहास में ये प्रत्येक सामाजिक व्यवस्था की नींव होते हैं।

• **वर्ग संघर्ष**

- जब उत्पादन के साधनों में परिवर्तन आता है तब विभिन्न वर्गों में संघर्ष बढ़ जाता है। मार्क्स का यह मानना था कि वर्ग संघर्ष सामाजिक परिवर्तन लाने वाली मुख्य ताकत होती है।
- पूँजीवादी व्यवस्था में उत्पादन के सभी साधनों पर पूँजीवादी वर्ग का अधिकार हाता है श्रमिक वर्ग का उत्पादन के सभी साधनों पर से अधिकार समाप्त हो गया।
- संघर्ष होने के लिए यह असवश्यक है कि अपने वर्ग हित तथा हित पहचान के प्रति जागरूक हों।
- इस प्रकार की ‘वर्ग चेतना’ के विकसित होने के उपरांत शासक वर्ग को

उखाड़ फेंका जाता है जो पहले से शासित अथवा अधीनस्थ वर्ग होता है – इसे ही क्रांति कहते हैं।

• एमिल दुर्खाइम

- दुर्खाइम की दृष्टि में समाजशास्त्र की विषय वस्तु – सामाजिक तथ्यों का अध्ययन दूसरे विज्ञानों की तुलना से विभिन्न था।
- अन्य प्राकृतिक विज्ञानों की तरह इसे भी आधुनिक विषय होना चाहिए था।
- दुर्खाइम के लिए समाज एक सामाजिक तथ्य था जिसका अस्तित्व नैतिक समुदाय रूप में व्यक्ति के ऊपर था। वे बंधन जो मनुष्य को समूहों के रूप में आपस में बँधते थे, समाज के अस्तित्व के लिए निर्णायक थे।
- समाज का वर्गीकरण –

1. यांत्रिक एकता

दुर्खाइम के अनुसार, परम्परागत सांस्कृतियों का आधार व्यक्तिगत एकरूपता होती है तथा यह कम जनसंख्या वाले समाजों में पाई जाती है, व्यक्तियों की एकता पर आधारित होते हैं।

2. सावयवर एकता

यह सदस्यों की विषमताओं पर आधारित है। पारम्पारिक निर्भरता सावयवी एकता का सार है इसमें आर्थिक अन्तः निर्भरता बनी रहती है।

यांत्रिक एकता

1. यह आदिम समाज में पाया जाता है।
2. यह कम जनसंख्या वाले समाज में पाई जाती है।
3. इसका आधार व्यक्तिगत एक रूपता होती है।
4. यह विशिष्ट रूप से विभिन्न स्वावलंबित समूह है।
5. यांत्रिक एकता व्यक्ति तथा समाज के बीच प्रत्यन सम्बन्ध स्थपित करती है
6. यांत्रिक एकता सामानताओं पर आधारित होती है।
7. यान्त्रिक एकता को हम दमनकारी कानूनों में देख सकते हैं।
8. यान्त्रिक एकता की शक्ति सामूहिक चेतना की शक्ति में होती है।

सावयवी एकता

1. यह आधुनिक समाज में पाया जाता है।
2. यह बहुत जनसंख्या वाले समय में पाई जाती है।
3. सामाजिक सम्बंध अधिकतर अव्यक्तिक होते हैं।
4. यह स्वावलंबी न होकर अपने उत्तरजीवी की दुसरी इकाई अथवा समूह पर आश्रित होती है।
5. सावयवी एकता में समाज के साथ व्यक्ति का प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता।
6. सावयवी एकता का आधार श्रम विभाजन है।
7. सावयवी एकता वाले समाजों में प्रतिकारी तथा सहकारी कानूनों की प्रमुखता दिखाई देती है।
8. सावयवी एकता की शक्ति / उत्पत्ति कार्यात्मक भिन्नता पर आधारित है।

दुर्खाइम द्वारा – दमनकारी कानून तथा क्षतिपूरक कानून में अंतर दमनकारी कानून

- | | |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|
| <p>1. दमनकारी समाज में कानून द्वारा गलत कार्य करने वालों को सजा दी जाती थी जो एक प्रकार से उसके कृत्यों के लिए सामूहिक प्रतिशोध होता था।</p> <p>2. आदिम समाज में व्यक्ति पूर्ण रूप से सामूहिकता में लिप्त था।</p> <p>3. आदिम समाज में व्यक्ति तथा समाज मूल्यों व आचारण की मान्यताओं को संजोये रखने के लिए आपस में जुड़े</p> | <p>क्षतिपूर्वक कानून</p> <ol style="list-style-type: none"> 1. आधुनिक समाज में कानून का मुख्य उद्देश्य अपराधी कृत्यों में सुधार लाना या उसे ठीक करना है। 2. आधुनिक समाज में व्यक्ति को स्वायत्त शासन की कुछ छुट है। 3. आधुनिक समाज में समान उद्देश्य वाले व्यक्ति स्वैच्छिक रूप से एक दूसरे के करीब आकर संगठन बना लेते हैं। |
|-----------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|---------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------------|

मैक्स वेबर

- वेबर पहले व्यक्ति थे जिन्होने विशेषा तथा जटिल प्रकार की 'वास्तुनिष्ठा' की आत की जिसे सामाजिक विज्ञान को अपनाना था।
- 'समानुभूति समझ' के लिए यह आवश्यक है कि समाजशास्त्री, बिना स्वयं को निजी मान्यताओं तथा प्रक्रिया प्रभावित हुए, पूर्णरूपेण विषयगत अर्थों तथा सामाजिक कर्ताओं की अभिप्रेरणाओं को इमानदारी पूर्वक विषयगत अर्थों तथा सामाजिक कर्ताओं की अभिप्रेरणाओं को ईमानझारीपूर्वक अभिलिखित करें।
- आदर्श प्रारूप
 - (1) आदर्श प्रारूप मॉडल की ही तरह एक मानसिक रचना है जिसका उपयोग सम्पूर्ण घटना या समस्त व्यवहार या क्रिया की वास्तविकता को व्यक्त करने के लिए किया गया।

पारंपारिक सत्ता	करिश्माई सत्ता का	तर्कसंगत वैधनिक
‘का उद्भव प्रथा तथा प्रचलन हुआ	उद्भव दैनिक स्रोतों से हुआ	का उद्भव कानून है।

नौकरशाही

- नौकरशाही संगठन का वह साधन था जो घरेलू दंनिया को सार्वजनिक दृनिया से अलग करने पर आधारित था।
- नौकरशाह सत्ता की विशेषताएँ निम्न हैं :
 1. अधिकारों के प्रकार्य
 2. पदों का सोपानिक क्रम
 3. लिखित दस्तावेजों की विश्वसनीयता
 4. कार्यालय का प्रबंधन
 5. कार्यालयी आचरण

अलगाववाद – पूँजीवाद समाज में यह ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत मनुष्य प्रकृति, अन्य मनुष्य, एनके कार्य तथा उत्पाद से स्वयं को दूर महसूस करता है तथा अकेला महसूस करता है, उसे अलगाववाद कहते हैं।

सामाजिक तथ्य – सामाजिक वास्तविकता का एक पक्ष जो आचरण तथा मान्यताओं के सामाजिक प्रतिमान से सम्बन्धित है जो व्यक्ति द्वारा बनाया नहीं जाता परन्तु उनके व्यवहार पर दबाव डालता है।

2 अंक वाले प्रश्न

1. 'ज्ञानोदय' शब्द अर्थ बताएँ।
2. कार्ल मार्क्स के अनुसार के विकास के विभिन्न स्तर क्या थे ?
3. नौकरशाही से असप क्या समझाते हैं ?
4. परंपरागत सत्ता करिश्माई सत्ता से किस प्रकार भिन्न है ?
5. सामाजिक तथ्य क्या है ?
6. तीन क्रांतियों के नाम लिखें कारण समाजशास्त्र का अध्युदय हुआ।

4 अंक वाले प्रश्न

1. फ्रांसीसी आंदोलन पर संक्षेप लिखें।
2. सामाजिक जीवन पर औद्योगिकरण के प्रभाव का वर्णन करें।
3. अलगाव की प्रक्रिया का उल्लेख करें।
4. वर्ग संघर्ष पर कार्ल मार्क्स के दृष्टिकोण बताएँ।
5. दुखाईम के समाजशास्त्रियों विचारधारा का उल्लेख करें।
6. यांत्रिक एकता के आधार पर समाज की विशेषताएँ बतायें।
7. 'सावयवी एकता आधुनिक समाज की पहचान है। 'व्याख्या करें।
8. वेबर के अनुसार आदर्श प्रारूप क्या है ?

6 अंक वाले प्रश्न

1. समाजशास्त्र में कार्ल मार्क्स के उच्च योगदान का संक्षिप्त वर्णन करें।
2. नौकरशाही की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. समाजशास्त्र में मैक्स वेबर के योगदान पर प्रकाश डालें।

अध्याय-5

भारतीय समाजशास्त्री

- (1) अनन्तकृष्ण अरुयर (1861 – 1937)
1. अनन्तकृष्ण अरुयर को 1902 में कोचीन के दीवान ने राज्य के नृजाजीय सर्वेक्षण के लिए कहा क्योंकि ब्रिटिश सरकार सभी रजवाड़ों में नृजातीय सर्वेक्षण कराना चाहती थी।
 2. उन्होंने इस कार्य को स्वयं सेवी के रूप में पूर्ण किया।
 3. कोचीन रजवाड़ों की तरफ से उन्हे राय बहादुर तथा दीवान बहादुर की उपाधि से सम्मानित किया गया।
 4. उन्हे Indian science congress के नृजातीय विभाग का अध्ययन चुना गया।
- (2) शरदचन्द्र राय – (1871 – 1942)
1. यह एक अग्राणी मानवविज्ञान थे।
 2. इन्होंने ईसाई मिशनरी विद्यालय में अंग्रेजी के शिक्षक के रूप में कार्य किया।
 3. ये 44 वर्ष तक रांची रहे तथा छोटा नागपुर (झारखण्ड) में रहने वाली जनजातियों की संस्कृति तथा समाज के विशेषज्ञ बने।
 4. उन्होंने जनजातीयों क्षेत्रों का व्यापक भ्रमण किया तथा उनके बीच रहकर गहन क्षेत्रीय अध्ययन किया।
 5. उन्हे सरकारी दुमाषिए के रूप में रांची की अदालत में नियुक्त किया गया। उनके द्वारा ओराव मुंडा तथा रवरिया जनजातियों पर किया गया लेखन कार्य भी प्रकाशित हुआ।

स्मरणीय बिन्दु :

3. जाति तथा प्रजाति पर धूर्य के विचार

(1) जाति एंव प्रजाति

- हर्बर्ट रिजले के अनुसार मनुष्य का विभाजन उसकी शारीरिक विशिष्टताओं को ध्यानमें रखते हुए जैसे 7 खोपड़े की चौड़ाइ, नाक की लम्बाई अथवा कपाल का भार आदि
- यह मान्यता थी कि भारत विभिन्न प्रजातियों के अध्ययन की एक 'प्रयोगशाला' था क्योंकि जातीय अंतर्विवाह निषिद्ध था।
- सामान्य रूप से उच्च जाजियाँ भारतीय प्रजाति की विशिष्टताओं से मिलती हैं।
- यह सुझाव दिया कि रिजले का तर्क व्यापक रूप से केवल उत्तरी भारत के लिए ही सही है। भारत के अन्य भागों में, अंतर समूहों की विभिन्नताएँ व्यापक नहीं हैं।
- अतः 'प्रजातीय शुद्धता' केवल उत्तर भारत में ही बची हुई थी क्योंकि वहाँ अंतर्विवाह निषिद्ध था। शेष भारत में अंतर्विवाह का प्रचलन उन वर्गों में हुआ जो प्रजातीय स्तर पर वैसे ही भिन्न थे।

(1) जाति की विशेषताएँ

- खंडीय विभाजन पर आधारित : समाज कई बंद पारस्पारिक अनन्य खंडों में बँटा है।
- सोपनीक विभाजन पर आधारित : प्रत्येक जाति दूसरी जाति की तुलना में असमान होती है। कोई भी दो जातियाँ समान नहीं होती।
- सामाजिक अंत : क्रिया पर प्रतिबंध लगाती है, विशेषाधिकार साथ बैठकर भोजन करने पर।

- भिन्न – भिन्न अधिकार तथा कर्तव्य निर्धारित होते हैं।
- जन्म पर आधारित तथा वंशानुगत होता है। श्रम विभाजन में कठोरता दिखाती है तथा विशिष्ट व्यवसाय कुछ विशिष्ट जातियों को ही दिये जाते हैं।
- विवाह पर कठोर प्रतिबंध लगाती है। अंत विवाह के नियम पर बल दिया जाता है।

(4) परंपरा एंव परिवर्तन पर डी. पी. मुखर्जी के विचार

(1) परंपरा

- डी. पी. मुखर्जी का मानना था कि भारत की सामाजिक व्यवस्थार ही उसका निर्णायक लक्षण है और इसलिए यह आवश्यक है कि सामाजिक परंपरा का अध्ययन हो।
- मुखर्जी का अध्ययन केवल भूतकाल तक ही सीमित नहीं था बल्कि वह परिवर्तन की संवेदनशील से भी जुड़ा हुआ था।
- जीवंत परंपरा : परंपरा जिसने अपने आपको भूतकाल सं जोड़ने के साथ ही साथ वर्तमान के अनुरूप भी ढाला था और इस प्रकार समय के साथ अपने आपको विकसित करे।
- तर्क दिया कि भारतीय संस्कृति व्यक्तिवादी नहीं है, इसकी दिशा समूह, संप्रदाय तथा जाति के क्रियाकलापों द्वारा निर्धारित होती है।
- 'परंपरा' शब्द का मूल अर्थ : परंपरा की मजबूत जड़ें भूतकाल में होती हैं और उन्हें कहानियों तथा मिथ्यों द्वारा कहकर और सुनकर जीवित रखा जाता है।

परिवर्तन

- परिवर्तन के तीन सिद्धांत – श्रुति, स्मृति तथा अनुभव (व्यक्तिगत अनुभव) क्रांतिकारी सिद्धांत हैं।
- भारतीय समाज में परिवर्तन का सर्वप्रथम सिद्धांत सामान्यीकृत अनुभव अथवा सामूहिक अनुभव था।
- डी. पी. मुखर्जी के अनुसार भारतीय संदर्भ में बुद्धि – विचार, परिवर्तन के लिए प्रभवशाली शक्ति नहीं है बल्कि अनुभव और प्रेम परिवर्तने के उत्कृष्ट कारक है।
- संघर्ष तथा विद्रोह सामूहिक अनुभवों के आधार पर कार्य करते हैं।
- परंपरा का लचीलापन इसका ध्यान रखता है कि संघर्ष का दबाव परंपराओं को बिना तोड़े उनमें परिवर्तन लाए।

(5) राज्य पर ए. आर. देसाई के विचार

(1) कल्याणकारी राज्य कि विशेषताएँ :

- कल्याणकारी राज्य एक सकारात्मक राज्य होता है।
- कल्याणकारी राज्य केवल न्यूनतम कार्य ही नहीं करता जो कानून तथा व्यवस्था को बनाए रखने के लिए आवश्यक होते हैं।
- यह हस्तक्षेपीय राज्य होता है और समाज की बेहतरी के लिए सामाजिक नीतियों को लागू करने के लिए अपनी शक्तियों का प्रयोग करता है।
- यह एक लोकतांत्रिक राज्य होता है।
- लोकतंत्र की एक अनिवार्य दशा होती है।
- औपचारिक लोकतांत्रिक संस्थाओं बहुपार्टी चुनाव विशेषता समझी जाती है।
- इसकी अर्थव्यवस्था मिश्रित है।

- मिश्रित अर्थव्यवस्था ऐसी अर्थव्यवस्था है जहाँ निजी पूकृजीवादी कंपनियाँ तथा राज्य दोनों साथ – साथ काम करती हैं।
 - कल्याणकारी राज्य न तो पूँवादी बाजार को खत्म करता है और न ही यह जनता को निवेश करने से रोकता है।
 - (2) कल्याणकारी राज्य के कार्य परीक्षण के आधार
 - यह गरीबी, सामाजिक भेदभाव से मुक्ति तथा अपने सभी नागरीकों की सुरक्षा का ध्यान रखता है।
 - यह आय संबंधित असमानताओं को दूर करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण कदम उठाता है।
 - अर्थव्यवस्था को इस प्रकार से परिवर्तित करता है जहाँ पूँजीवादीयों की अधिक से अधिक लाभ कमाने की प्रवृत्ति पर रोक लगाता है।
 - स्थायी विकास के लिए आर्थिक मंदी तथा तेजी से मुक्त व्यवस्था का ध्यान रखा जाता है।
 - सबके लिए रोजगार उपलब्ध कराता है
- (3) कल्याणकारी राज्य के आधार
- अधिकांश आधुनिक पूँजीवादी राज्य अपने नागरीकों को निम्नतम आर्थिक तथा सामाजिक सुरक्षा देने में असफल रहे हैं।
 - आर्थिक असमानताओं को कम करने में सफल नहीं हा पायें हैं।
 - बाजार के उतार – चढ़ाव से मुक्त स्थायी विकास करने में असफल रहे हैं।
 - अतिरिक्त धन की उपस्थिति तथ अत्याधिक बेरोजगारी इसकी कुछ अन्य असफलताएँ हैं।
- (6) एम. एन. श्रीनिवास के गाँव संबंधी विचार
- (1) एम. एन. श्रीनिवास के लेख
- गाँव पर श्रीनिवास द्वारा लिखे गए लेख मुख्यतः दो प्रकार के हैं।
सर्वप्रथम, गाँवों में किए गए क्षेत्रीय कार्यों का नुजातीय ब्यौरा।
द्वितीय, भारतीय गाँव का सामाजिक विश्लेषण, ऐतिहासिक तथा अवधारणात्मक परिचर्चाएँ।
 - (2) गाँव पर लुई ड्यूमां का दृष्टिकोण
- उनका मानना था कि गात्रव को एक श्रेणी के रूप में महतव देना गुमराह करने वाला हो सकता है।
 - लुई का मानना था कि जाति जैसी संस्थाएँ गाँव के तुलना में अधिक महत्वपूर्ण होती हैं।
 - उनका मानना था कि लाग गाँव को छोड़कर दूसरे गाँव को जा सकते हैं, लेकिन उनको सामाजिक संस्थाएँ सदैव उनके साथ रहती हैं।
- (4) गाँव का महत्व
- गाँव ग्रामीण शोधकार्यों के स्थल के रूप में भारतीय समाजशास्त्र को लाभान्वित करते हैं।
 - इसने नृजातिय शोधकार्य की पद्धति के महत्व से परिचित कराने का मौका दिया।
 - सामाजिक परिवर्तन के बारे में आँखों देखी जानकारी दी।

- भारत के आंतरिक हिस्सों में क्या हो रहा था, पूर्ण जानकारी दी।
- अतः यहेहा जा सकता है कि गाँव के अध्यायन से ही संपूर्ण भारत का विकास हुआ तथा समाजशास्त्रियों को कार्य क्षेत्र मिला।

2 अंक वाले प्रश्न

1. भारत के किन्हीं दो सामाजिक नृजस्तियों के नाम लिखें।
2. भारत में धुर्यों को संस्थापकीय समाजशास्त्र का संस्थापक क्यों समझा जाता है।
3. जाति अंतर्विवाह से क्या समझते हैं ?
4. जीवंत परंपरा से आप क्या समझते हैं ?
5. डी. जी. मुखर्जी का परिवर्तन सिद्धान्त क्या है ?
6. कल्याणकारी राज्य का क्या तात्पर्य है ?
7. भारतीय गाँव पर लुई के क्या दृष्टिकोण थे ?
8. 'परंपरा से क्या समझते हैं ?

4 अंक वाले प्रश्न

1. भारतीय आदिवासियों के प्रति धुर्यों के विचार लिखें।
2. भारत में जाति तथा प्रजाति के मध्य संबंध पर हर्बर्ट रिजले एंव धुर्यों के मतों की व्याख्या करें।
3. डी. पी. मुखर्जी ने भारतीय समाजशास्त्रीयों परम्पराओं पर ध्यान देने पर क्यों बल दिया ?
4. डी. पी. मुखर्जी के अनुसार परिवर्तन के सिद्धान्त के व्याख्या कीजिए।
5. ए. आर. देसाई के अनुसार परिवर्तन के सिद्धान्त की व्याख्या कीजिए।
6. क्या कल्याणकारी राज्य की सोच एक मिथ्या या सच्चाई है ? अपने उत्तर की पृष्ठि उदाहरण सहित कीजिए।
7. भारतीय समाजशास्त्र के इतिहास में ग्रामीण अध्यायनों का महत्व स्पष्ट कीजिए।

6 अंक वाले प्रश्न

1. धुर्यों के अनुसार जाति के संरचनात्मक लक्षणों का उल्लेख कीजिए।
2. परंपरा तथा आधुनिकता के विषय में डी. पी. मुखर्जी के विचारों का उल्लेख कीजिए।
3. कल्याणकारी राज्य क्या है ? ए. आर. देसाई का इस विषय में सामीक्षात्मक दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।
4. भारतीय समाजशास्त्र में ग्रामीण अध्ययन को आगे बढ़ाने में एम. एनत्र. श्रीनिवास की भूमिका का उल्लेख कीजिए।
5. ग्राम की समाजशास्त्रीय अनुसंधान का विषय बनाने के संदर्भ में तर्क – वितर्क दीजिए।

Annexure - A

अनुसंधान प्रारूप

विषय : मास मीडिया की भूमिका

शोध प्रश्न : युवा (15–25 वर्ष) पर टेलीविजन का प्रभाव

परिचय :

- मास मीडिया द्वारा क्या समझा जाता है ?
- युवाओं के बीच लोकप्रिय विभिन्न मास मीडिया (रेडियो, टेलीविजन, फ़िल्म, प्रिंट मीडिया, इंटरनेट)
- टेलीविजन, एक लोकप्रिय मास मिडिया कैसे है ?

प्रयोजन के बयान :

- युवाओं के मनोरंजन के विभिन्न स्रोत
- टीवी चैनलों में कुछ लोकप्रिय कार्यक्रम में आज ज्यादा युवा दर्शक हैं।
- प्रभावित विभिन्न कार्यक्रमों ने भाषा, पोशाक तथा व्यवहार को प्रभावित किया।
- पश्चिमीकरण ने गैर भारतीय मूल्य की तुलना में युवाओं को कैसे प्रभावित किया है ?

शोध पद्धति :

- उपरोक्त विषय के लिए सबसे उपयुक्त अनुसंधान तकनीकी प्रयनावली का उपयोग कर सकते हैं।
- 15–25 साल आयु वर्ग उत्तरदाताओं का लक्ष्य समूह के लिए 10 से 15 एकाधिक पसंद सवालों के शामिल एक प्रश्पावली तैयार करें, सवालों के आणार पर किया जा सकता है :
 1. देखने के लिए कार्यक्रमों के विभिन्न प्रकार
 2. इस कार्यक्रम दिखाने वाले लोकप्रिय चैनल
 3. इन कार्यक्रमों की समय सीमा अगर अपने शैक्षणिक को प्रभावित करते हैं,

सीमा : अनुभव और विशेषज्ञता की कमी, जैसे संभव कमियों की ओर इशारा करते हुए : क्षेत्र, आर्थिक स्थिकत, लिंग, उत्तरदाताओं की शैक्षिक योग्यता का छोटा सा नमूना आकार (15)

विस्तृत विश्लेषण :

प्रतियात मेर्यादा के सर्वेक्षण (लगभग 5 महत्वपूर्ण सवाल) के परिणामों में कनवर्ट करें, कुछ सामान्यवीकरण पर पहुंचने के लिए पाई चार्ट सा बार रेखांकन में उन्हें प्रतिनिधित्व करें।

निष्कर्ष : ब्रॉड परिणाम अवलोकन सर्वेक्षण और अखबारों / पत्रिकाओं / इंटरनेट, जैसे archieval स्रोतों के माध्यम से पहुंचें,

अनुसंधान प्रारूप 2

विषय : पर्यावरण और समाज

शोध प्रश्न : यमुना की सुखद स्थिति के लिए जिम्मेदार कौन है ?

परिचय : प्राकृतिक संसाधनों का महत्व ।

पर्यावरण और मानव समाजे बीच दो मरह के रिश्ते :

हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर शोर, हवा, पानी – गलोबल वार्मिंग और प्रदूषण के विभिन्न स्रोतों का प्रभाव ।

प्रयोजन के बयान

- यमुना – यह क्या थी और क्या यह अब हो गयी है
- मानव कारकों जिम्मेदार – औद्योगिक अपशिष्ट की निकासी, मानव अपनशिष्ट आदि ।
- नदी के सफाई के संबंध में सरकार की योजना ।
- गरीब कार्यान्वयन – अपनी असफलता के कारणों ।

अनुसंधान METHODOLOGY

- उपरोक्त विषय के लिए सबसे उपयुक्त अनुसंधान तकनीक प्रश्नावली का प्रयोग कर सकते हैं ।
- पिछले कुछ वर्षों में नदी के इतिहास पर समाचार लेख / तस्वीरें ले लीजिए ।
- 15 एकाधिक पसंद सवालों – 10 के शामिल एक प्रश्नावली तैयार करें, 15 उत्तरदाताओं जिसमें एक नमूना चुनें ।
- उत्तरदाताओं कुछ वर्षों के लिए दिल्ली के निवासी हैं (अधिमानतः वरिष्ठ नागरिक) जो एक के पड़ोस में चुना जा सकता है ।
- प्रश्न पर अपनी राय पर पारित किया जा सकता है:
- (क) यमुना की दुखद स्थिति के लिए कारण
- (ख) क्या पहले उन्होंने पहले की स्थिति के लिए कारण
- (ग) दनकी राय स्थिति बनाने में सरकार की भूमिका के बारे में
- (घ) नागरीक की भूमिका के साथ ही सरकार की भूमिका के लिए सूझाव ।

सीमा: एक अनुसंधान के संभावित कमियों को लिखिते हुए जैसे, छोटा – सा नमूना आकार, अनुसंधान के क्षेत्र की सीमा, उम्र, आर्थिक स्थिति, उत्तरदाताओं की शैक्षिक

योग्यता, अनुभव और विशेषज्ञता की कमी।

विष्टृत विश्लेषण

प्रतिक्रियाएँ एकत्र करने के बाद, प्रतिशत सवालों के परिणामों को बदलने और पाई चार्ट या बार रेखांकन में उन्हें प्रतिनिधित्व करना है।

निष्कर्ष :

आज यमुना की सुखद स्थिति के कारणों के बारे में पहुंचें और स्थिति में सुधार कैसे किया जा सकता है जिसके द्वारा (उत्तरदाताओं की राय से ड्राइंग) कुछ तरीके सुझाने के बारे में लिखें।

अनुसंधान प्रारूप 3

विषय : शारीरिक रख – रखाव और खाने की आदतों।

शोध प्रश्न : किस हद तक जंक फूड की खपत बच्चे (5–15 वर्ष) के रूप को प्रभावित किया है?

परिचय : एक समाज की संस्कृति का एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में खाद्य आदतों, पारंपरिक भारतीय भोजन।

- वैश्वीकरण और भारत में विदेशी फूड चेन की शुरूआत।

प्रयोजन के ब्यान

- बढ़ते पश्चिमीकरण और पश्चिमी भोजन, पोशाक, भाषा को अपनाना।
- जंक फूड और बच्चों के स्वास्थ्य पर इसके प्रसाद की खपत।
मोटापा, आलस्य, किशोर में मधुमेह, संभव स्वास्थ्य खतर रक्तचाप आदि।
प्रिंट मीडिया या इंटरनेट से कुछ मामलों का अध्ययन मिलता है

शोध पद्धति

उपयुक्त अनुसंधान तकनीक 5–15 साल के आयु वर्ग के बच्चों 10 से 15 माता – पिता शामिल नमूना सर्वेक्षण जाएगा।

10 से 15 एकाधिक पसंद सवालों की प्रश्नावली तैयार करें :

- (क) बच्चों की दैनिक भोजन की आदतों
- (ख) वे स्कूल में दोपहर के भोजन के लिए क्या लेकर जाते हैं।
- (ग) जंक फूड की खपत की आवृत्ति।
- (घ) घर के बाहर खेले जाने वाले खेल।
- (ई) टीवी देखने या नेड सर्फिंग बिताया समय।

सीमा : अनुभव और कौशल की कमी, छोटे आकार के नमूने, आर्थिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक योग्यता सहित एक शोध के संभव कमियों की सूची बनाएँ

विस्तृत विश्लेषण

नमूने और सामान्यीकरण के आधार पर प्रभावशाली के 5 महत्वपूर्ण सवालों को प्रतिशत में कनवर्ट करें। पाई चाई बार ग्राफ में दर्शाएँ।

निष्कर्ष :

टिप्पणियों के आधार पर, बच्चों और अपने स्वास्थ्य के परिणामों के बीच में जक फूड की बढ़ती लोकप्रियता के कारण के बारे में एक सामान्यीकरण पर पहुंचे,

अनुसंधान प्रारूप 4

विषय : संयुक्त परिवार प्रणाली

शोध प्रश्न : संयुक्त परिवारों में लिंग आधारित रूढ़िबद्धता की भूमिका है।

परिचय : परिवार के विभिन्न प्रकार

संयुक्त परिवारों के विभिन्न प्रार माता – पिता/ग्रांड माता – पिता/बच्चे यानी विवाहिता भाई और उनके परिवार।

प्रयोजन के ब्यान :

विभिन्न परिवार के सदस्यों द्वारा निभाई गई भूमिका।

विभिन्न सदस्यों को सत्यापित लिंग विशिष्ट भूमिकाओं।

महिलाएँ और उनकी भूमिकाएँ।

सत्ता किन सदस्यों पर आधारित है?

शोध पद्धति :

उपयुक्त अनुसंधान तकनीक – अवलोकन और साक्षात्कार होगा।

5–7 संयुक्त परिवारों को पहचानें। एक बार वहाँ और विभिन्न सदस्यों, खासकर महिला सदस्यों द्वारा निभाई गई भूमिका के बारे में पता करे बाद में अवलोकन रिकार्ड करें।

अनौपचारिक सवाल शामिल करे। महिला सदस्य को पूछने के लिए सवालों की एक अनौपचारिक सूची तैयार करें:

(क) वे कितनी शिक्षित हैं?

(ख) परिवार में प्रमुख निर्णय कौन लेता है?

(ग) क्या उन्हें काम करने के लिए अनुमति दी गई है?

सीमाएँ :

एक छात्र शोधकर्ता के रूप में अपने संभावित कमियों को स्वीकार करें। जैसे – नमूने का आकार अनुसंधान का क्षेत्र।

विस्तृत विश्लेषण :

संयुक्त परिवारों के अवलोकन और साक्षात्कार के आधार पर संयुक्त परिवारों में प्रचलित भूमिका रूढ़िबद्धता के बारे में सामान्यीकरण पर पहुंचने की कोशिश करें।

Annexure - B

SOCIOLOGY - XI (समाजशास्त्र)

Sample Paper - 1

समय : 3 घंटे

M. M.: 80

- (1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
- (3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
- (4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

1. List two difference between human and animals society.
मानव तथा पशु समाज में दो अंतर बताइए।
2. What is material culture.
भौतिक संस्कृति का क्या अर्थ बताइए।
3. What is meant by Fraternal Polyandry.
ब्रातृ बहुपति विवाह का अर्थ बताइए।
4. Give meaning of social structure.
सामाजिक संरचना का क्या अर्थ है।
5. What is cultural lag.
सास्कृतिक विलम्बना अथवा संस्कृति का पिछड़ना का क्या अर्थ है?
6. What is society ?
समाज का अर्थ बताइए।
7. Give meaning of social change ?
सामाजिक परिवर्तन का अर्थ बताइए।
8. When and where did the teaching of sociology began in India ?
भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्यापन कब और कहाँ हुआ?
9. What is meant by 'Role'?
भूमिका से क्या अभिप्राय है?
10. What is meant by water pollution ?
जल प्रदूषण किसे कहते हैं?
11. Describe in your own words what do you understand by term 'ecology'.
'पारिस्थितिकी' शब्द से क्या तात्पर्य है? अपने शब्दों में वर्णन किजिए।

12. Which two classes are given by Karin Marx ?
कार्ल मार्क्स के अनुसार संसार में कौन – कौन से दो वर्ग होते हैं।
13. What do you men by Ideal types ?
आदर्श प्रारूप से आप क्या समझते हैं ?
14. What is theory of alienation ?
अलगाव का सिद्धांत क्या है ?
15. What is the need to conserve the environment ?
पर्यावरण के संरक्षण की क्या आवश्यकता है ?
16. What are the characteristics of Bureaucracy ?
नौकरशाही की बुनियादी विशेषताएँ क्या हैं ?
17. What are the main functions of a family ?
परिवार के कार्यों का वर्णन किजिए ?
18. How does an individual become a criminal ?
व्यक्ति अपराधी किस तरह बनता है ?
19. What changes are coming in religion ?
धर्म मे कौन – कौन से परिवर्तन आ रहे हैं ?
20. Describe the two way process by which social environments emerge.
उस दोहरी प्रक्रिया का वर्णन किजिय जिसके कारण सामाजिक पर्यावरण का उद्भव होता है।
21. What do you thinks is the most effective agent of socialisation for your generation? How do you think it was different before?
आपके अनुसार आपकी पीढ़ी के लिए समाजिकरण का सबसे प्रभावी अभिकरण क्या है ? यह पहले अलग कैसे था, आप इस बारे में क्या सोचते हैं ?
22. Discuss the different tasks that demand cooperation with references to agriculture or industrial operation.
कृषि तथा उद्योग के संदर्भ में सहयोग के विभिन्न कार्यों की आवश्यकता की चर्चा कीजिए।
23. What changes are coming in the forms of family? Explian.
परिवार के स्वरूप में परिवर्तन आने के क्या कारण हैं ? व्याख्या किजिए।
24. Explain the types of authority given by Max Weber.
मैक्स वेबर द्वारा दिए गए सत्ता के प्रकारों का वर्णन कीजिए।
25. Read the passage carefully and answer the questions that follow:
We boys used the streets for so many different things - as a place to stand around watching, to run around and play, try out the

maneuverability of our bikes, Not so for girls. As we noticed all the time, for girls the street was simply a means to get straight home from school. And even for this limited use of the street, they always went in clusters, perhaps because behind their purposeful demeanor they carried the worst fears of being assaulted. (Kumar 1986).

- (a) What does the passage convey about the society where the above observation has been made ?
- (b) What normative dimension of culture does it express ?
- (c) Is the socialization process gendered ? Justify with reference to the above passage.

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़े तथा निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो :

हम लड़के गलियों का प्रयोग अनेक वस्तुओं के लिए करते हैं – एक स्थान की तरह, जहाँ खड़े होकर आस – पास देखते हैं। दौड़ने तथा खेलने के लिए, अपनी मोटरसाईकिलों पर विभिन्न करजब करने के लिए। लड़कियों के लिए ऐसा नहीं है। जैसा कि हम हर समय देखते हैं, लड़कियों के लिए गलियाँ विद्यालयों से सीधे घर जाने के लिए हैं। तथा गली के इस सीमित प्रयोग के लिए भी वे सदा झुंड में जाती हैं, शायद इसके पीछे उनके मौजूद छेड़खानी का भय है (कुमार 1986)

- (क) ऊपर दिए गए गद्यांश से सामाजिक दृष्टिकोण को समझाए।
- (ख) संस्कृति के किस मानकीय पक्ष को दर्शाया गया है ?
- (ग) क्या समाजीकरण लंगवादी है ? अपने विचार प्रस्तुत करें।

SOCIOLOGY - XI **(समाजशास्त्र)**

Sample Paper - 2

समय : 3 घंटे

M. M.: 80

- (1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
- (3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
- (4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

1. What are the different social processes of the society ?
समाज की विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाएँ कौन – कौन सी हैं ?
2. Give the definition of culture.
संस्कृति की परिभाषा दीजिए ?
3. What do you mean by female headed households ?
महिला प्रधान घर से आप क्या समझते हैं ?
4. What are the different sources of elements in the process of production.
उत्पादन के तरीकों के विभिन्न घटक कौन – कौन से हैं ?
5. What do you mean by socialisation ?
समाजिकरण से आप क्या समझते हैं ?
6. What is complex society?
जटिल समाज क्या है ?
7. Explain Evolution ?
“उद्विकास” को समझाएँ ।
8. When and where did the teaching of sociology begin in India ?
भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्यापन कब और कहाँ प्रारंभ हुआ ?
9. What do you mean by 'Role Conflict' ?
'भूमिका संघर्ष' आप क्या समझते हैं ?
10. What do you mean by "ecology" ?
“पारिस्थितिकी” से आपका क्या अभिप्राय है ?

11. Give examples of natural and man made environment depletion.
प्राकृतिक तथा मानव निर्मित पर्यावरण विनाश के उदाहरण दीजिए।
12. Explain capitalism.
पूँजीवाद को समझाएँ।
13. According to Max Weber, What is "authority" ?
मैक्स वेबर के अनंसार “सत्ता” क्या है ?
14. What do you mean by welfare state ?
कल्याणकारी राज्य से आप क्या समझते हैं ?
15. "Environment problems are also social problems. "How ?
“ पर्यावरण की समस्याएँ सामसजिक समस्याएँ भी हैं । ” कैसे ? स्पष्ट कीजिए।
16. According to Karl Marx, Why does conflict exist between different classes ?
मार्क्स के अनुसार विभिन्न वर्गों में संघर्ष क्यों होता है ?
17. Discuss the important functions of the family ?
परिवार के महत्वपूर्ण कार्यों की चर्चा कीजिए।
18. Give your views regarding the problems of urban areas.
नगरीय क्षेत्रों की समस्याओं पर अपने विचार लिखिए।
19. Explain 'stateless society' ?
‘राज्यविहीन समाज’ को स्पष्ट कीजिए ?
20. Discuss in detail the various problems of environment.
पर्यावरण की प्रमुख समस्याओं की विस्तार से चर्चा कीजिए।
21. What do you mean by global warming ? Discuss the effects of global warming.
‘ग्लोबल वार्मिंग से आप क्या समझते हैं ? इसके प्रभावों की चर्चा कीजिए।
22. Explain in detail the different agents of socialization.
समाजीकरण के विभिन्न अभिकरणों को विस्तार से समझाइए।
23. Competition, co-operation and conflict are related to each other.
Explain giving examples.
‘प्रतियोतिगति सहयोग और संघर्ष का आपस में संबंध है । ” उदाहरण सहित चर्चा कीजिए।
24. According to the Durkheim explain "Division of labour."
दुर्खाइम के अनुसार “समाज के श्रम विभाजन को समझाए।

25. Read the following passage carefully and answer the question that follow:

Developing countries are today arenas for conflict between the old and the new. The old order is no longer able to meet the new forces, nor the new wants and aspirations of the people. The conflicts produces much unseemly argument, discord, confusion, and on occasion, even bloodshed.

But a moment's reflection should convince him that the old order was not conflict - free and that it perpetrated inhuman cruelties on vast sections of the population.

Source : Srinivas M.N., 1972 Social

1. What do you understand by 'new and old order'? Why is it a source of conflict in developing countries ? 2 + 2 = 4
2. Why is conflict essential for any society ? 2

SOCIOLOGY - XI **(समाजशास्त्र)**

Sample Paper - 3

समय : 3 घंटे

M. M.: 80

- (1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
- (3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
- (4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

1. What is the social stratification ?
सामाजिक स्तरीकरण से क्या अभिप्राय है ?
2. What do you mean by 'Ethnicity' ?
'नृजातीयता' से आप क्या समझते हैं ?
3. What do you mean by 'Endogamy' ?
अंतर्विवाह से आप क्या समझते हैं ?
4. Define capitalism.
पूँजीवाद को समझाएँ।
5. What is sub - culture ?
उप-संस्कृति से क्या अभिप्राय है ?
6. Why is the study of sociology necessary?
समाजशास्त्र का अध्ययन क्यों आवश्यक है ?
7. Write the reasons of social change.
सामाजिक परिवर्तन के कारण लिखें।
8. When and where did the teaching of sociology begin in India ?
भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्यापन कब और कहाँ प्रारंभ हुआ ?
9. What do you mean by 'social status' ?
सामाजिक प्रारिथति से आप क्या समझते हैं ?
10. Explain 'Social ecology'.
सामाजिक पारिस्थितिक को समाएँ।
11. Write examples of man made environment destruction.
मानव – निर्मित पर्यावरण – विनाश के उदाहरण दीजिए।

12. Which two classes are given by Karl Marx ?
कार्ल – मार्क्स के अनुसार संसार में कौन – से दो वर्ग होते हैं ?
13. Differentiate between ascribed and achieved status.
पर्यावरण पर प्रौद्योगिकीय प्रभवों का उल्लेख कीजिए ।
14. What are the different forms of natural disasters related to pollution ?
प्रदूषण संबंधित प्राकृतिक विपदाओं के मुख्य रूप कौन – कौन से हैं ?
15. Distinguish between Mechanical and Organic Solidarity?
यांत्रिक एंव जैविक सदभाव में अंतर स्पष्ट कीजिए ?
16. Discuss the changing forms of the family.
परिवार के बदलते स्वरूपों की चर्चा कीजिए ।
17. Explain briefly the different agencies of socialisation ?
समाजीकरण के विभिन्न अभिकरणों का संक्षेप में उल्लेख करें ?
18. Write the characteristics found in all the religions.
सभी धर्मों में पाई जाने वाली विशेषताएँ लिखिए ।
19. Discuss the implications of 'Genetically Modified Farming'.
'जैविक रूपांतरित खेती' के परिणामों की चर्चा कीजिए ।
20. Family is the effective agent of Socialisation. Discuss.
“परिवार समाजीकरण का प्रभावी अभिकरण है ।” चर्चा कीजिए ।
21. Discuss with examples, "co-operation" with reference to modern society.
आधुनिक समाज के संदर्भ में “सहयोग” को उदाहरण सहित चर्चा कीजिए ।
22. Write about the achievements of M.N. Srinivas.
एम. एन. श्रीनिवास का जीवन परिचय एंव मुख्य उपलब्धियाँ लिखिए ।
23. Discuss in detail about Material Dimensions of culture.
संस्कृति के भौतिक पक्ष विस्तार से चर्चा कीजिए ।
24. Read the passage given below and answer the question that follow:
When men migrate to urban areas, women have to plough and manage the agriculture fields. Many a time they become the sole providers of their families.
Such households are known as female headed households.

Widowhood too might create such familial arrangement, Or it may happen when men get remarried and stop spending remittance to their wives, children and other dependents. In such a situation, women have to ensure the maintenance of the family. Among the Kolams, a tribal community in south - eastern Maharashtra and northern Andhra Pradesh, a female headed household is an accepted norm.

1. What is understood by 'feminisation of agriculture' ?
2. State any two causes of 'feminisation'. Name the states where this norm is practised.

(समाजशास्त्र)

Sample Paper - 4

समय : 3 घंटे

M. M.: 80

- (1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
- (3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
- (4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।
- 1. श्रम विभाजन क्या है ?
- 2. परम्परागत सत्ता क्या है ?
- 3. प्राथमिक समूह की परिभाषा बताओ।
- 4. संस्कृति के प्रकार बताओ।
- 5. गलोबल वार्मिंग क्या है ?
- 6. पारिस्थितिकी से आप क्या समझते हैं ?
- 7. वायु प्रदूषण किन कारणों से होता है ?
- 8. सामाजिक स्तरीकरण क्या है ?
- 9. अन्तः विवाह तथा बर्हिविवाह में अन्तर स्पष्ट करो।
- 10. कल्याणकारी राज्य का अर्थ स्पष्ट करो।
- 11. सामाजिक नियन्त्रण से आप क्या समझते हैं।
- 12. सन्दर्भ समूह का अर्थ बताओ।
- 13. शिक्षा के दो उद्येश्य बताओ।
- 14. अलगाववाद क्या है ?
- 15. युवावर्ग में बढ़ती हिंसा और अपराध के कारण बताओ।
- 16. परिवार के कार्य बताओ।

या

- पारिवारिक संरचना में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या करो।
- 17. समाज शास्त्र और इतिहास एक दूसरे के पूरक है कैसे ?
- 18. वर्ग संघर्ष के कारणों की व्याख्या करो।
- 19. नातेदारी क्या है यह कितने प्रकार की है।
- 20. यांत्रिक एकता और सावधानी एकता में अन्तर बताओ।
- 21. ऐसे एन श्री निवास के अनुसार को विस्तार से समझाओ।

या

पर्यावरण संरक्षण क्यों आवश्यक है विस्तार से बताओ।

22. नौकरशाही संरक्षण क्यों आवश्यक है विस्तार से बताओ।
23. नौकरशाही के कार्यों का उल्लेख करो।
24. धूर्ये द्वारा जाति की विशेषताओं का वर्णन करो।
25. निमन गद्यांश पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दो।

एक आधुनिक सताज सांस्कृतिक विभिन्नता का प्रशंसक होता है तथा बाहर से पड़ने वाले सांस्कृतिक प्रभावों के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं करता परन्तु ऐसे सभी प्रभावों को सदैव इस प्रकार शामिल किया है कि ये देशीय संस्कृति के साथ मिल सके। विदेशी शब्दों को शामिल करने के बावजूद अंग्रेजी अलग भाषा नहीं बन सकी ही हिन्दी फ़िल्मों के संगीत ने अन्य जगहों से उधार लेने वावजूद अपना स्वरूप खोया विविध शैलियों रूपों श्रव्यों तथा कलाकृतियों को शामिल करने से विश्वव्यापि संस्कृति की पहचान प्राप्त होती है। आज विश्व में जहाँ संचार के आधुनिक साधनों से विश्वव्यापि पर्यवेक्षण प्रत्येक व्यक्ति को अपनी संस्कृति को विभिन्न प्रभावों द्वारा सशक्त की मुख्य विशेषता क्या है।

1. आधुनिक समाज की मुख्य विशेषता क्या है ?
2. विश्वव्यापि संस्कृति की पहचान क्या है ?

(समाजशास्त्र)

सैम्प्ल पेपर – 5

समय : 3 घंटे

M. M.: 80

- (1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
- (2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
- (3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
- (4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।

1. समाज गतिशील है कैसे ?
2. अन्तर्समूह क्या है ? उदाहरण सहित स्पष्ट करें।
3. पूँजीवाद के लक्षण बताओ।
4. लिंग के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण की व्याख्या करें।
5. 'ग्रीन हाउस का क्या अर्थ है ?
6. पारिवारिक व्यवस्था में हुए बदलावों पर अपने विचार लिखें।
7. प्रजातीय श्रेष्ठता क्या है ?
8. जजमानी प्रथा क्या है ?
9. अपने समाज में विवाह के कौन से नियमां का पालन किया जाता है ?
10. समाज शास्त्र इतिहास पर कैसे आधारित है ?
11. 'अगस्त क्रांति' को समाज शास्त्र का जनक क्यों कहा जाता है ?
12. अलगाववाद का सिद्धान्त क्या है ?
13. समाजशास्त्र में उदगम और विकास का अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है ?
14. भौतिक संस्कृति तथा अभौतिक संस्कृति में अन्तर स्पष्ट करें।
15. गाँव कस्बे और शहर किस प्रकार से भिन्न हैं।
16. किन्ही दो धर्मों में समानता व अन्तर बताएँ जैसे हिन्दु और मुस्लिम सिम्स इत्यादि
17. प्रदत्त प्रस्थिति तथा अर्जित प्रस्थिति में क्या अन्तर स्पष्ट करें।

अथवा

- पद और भूमिका एक ही सिक्के के दो पहलु हैं। स्पष्ट करें।
18. प्रतियोगिता व संघर्ष में अन्तर स्पष्ट करें।
 19. सामाजिक परिवर्तन के प्रकार लिखें।
 20. वायु प्रदूषण से होने वाली समस्याओं को रोकने के लिए दिल्ली सरकार द्वारा नए – नए कदम तथा प्रव्यावों / परिणामों पर चर्चा करें।
 21. समाज में बढ़ते हुए 'किशोर अपराध' के मुख्य कारणों पर चर्चा करें।

22. समाज क्या होता है। तथा उसकी विशेषताओं का वर्णन करें।
23. कार्ल मौर्क्स के वर्ग संघर्ष के सिद्धान्त के बारे में लिखो।

अथवा

मैक्स वैबर ने नौकरशाही को लोकतंत्र की रीढ़ की हड्डी क्यों कहा है ?
स्पष्ट करें।

24. नगरीय क्षेत्रों की सामाजिक व्यवस्था के सामने कौन सी चुनौतियाँ हैं ?
25. नीचे दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़े तथा प्रश्नों के उत्तर दें।

अंतरजातीय विवाह करने ने बहन की हत्या की

पुलिस के अनुसार 19 वर्षीय एक लड़की... जब अस्पताल में सो रही थी तब उसके बड़े भाई ने उसका सिर कलम कर उसकी हत्या कर दी जिसे 'इज्जत के लिए हत्या (ऑनर किलिंग) कहा जाता है।

उन्होंने कहा कि लड़की..... द्वारा जाति के बाहर विवाह करने के बाद 16 दिसंबर को उसके भाई.... ने उस पर चाकू से हमला किया था और उसका अस्पताल में इलाज चल रहा था उन्होंने बताया कि वह और उसका प्रेमी 10 दिसंबर को घर से भाग गए थे और शादी करने के बाद 16 दिसंबर को अपने झार वापिस आ गए थे। उसके अभिभावको ने इस विवाह का विरोध किया था

पंचायत ने भी मुगल पर दबाव डालने की कोशिश की थी, पर उन्होंने अलग रहने से तना कर दिया था।

1. सम्मान रक्षा हेतु से आप क्या समझते हैं ? तथा जाति से बाहर विवाह को रोकने समबन्धी नियम बताएँ। 2 + 1
2. सामाजिक नियंत्रण की विभिन्न संस्थाओं का वर्णन करें 3

(समाजशास्त्र)

सैम्प्ल पेपर – 6

समय : 3 घंटे

हल सहित

M. M.: 80

- (1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(2) प्रश्न 1 से 14 तक प्रत्येक प्रश्न के 2 अंक हैं।
(3) प्रश्न 15 से 21 तक प्रत्येक प्रश्न के 4 अंक हैं।
(4) प्रश्न 22 से 25 तक प्रत्येक प्रश्न के 6 अंक हैं।
1. समाज की विभिन्न सामाजिक प्रक्रियाएँ क्या हैं ?
सामाजिक प्रक्रियाएँ – सहयोग, प्रतिस्पर्धा, संघर्ष।
 2. संस्कृति की परिभाषा दीजिए।
संस्कृति – संस्कृति या सभ्यता अपने व्यापक नृजातीय अर्थ में एक जटिल समग्र हैं जिसमें ज्ञान, आस्था, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा तथा मनुष्य के समाज के सदस्य के रूप में होने के फलस्वरूप प्राप्त अन्य क्षमताएँ तथ आदतें शामिल हैं
 3. निकटाभिगमन निषेध का क्या अर्थ है ?
प्राथमिक नातेदारों के बीच यौन सम्बन्धों पर पगतिबन्ध, नियमों का उल्लंघन दिया जाती है।
 4. श्रम विभाजन को समझाइये।
श्रम विभाजन – कार्य को विशिष्टीकरण जिसके माध्यम से विभिन्न रोजगार प्रणाली से जुड़े होते हैं।
 5. संस्कृति के पिछड़ेपन से आप क्या समझते हैं ?
जब भौतिक या तकनीकी आयाम तेजी से बदलते हैं तो मूल्यों तथा मानकों की दृष्टि से अभौतिक पक्ष पिछड़ सकते हैं। इससे संस्कृति की पिछड़ेपन को स्थित उत्पन्न हो सकती है।
 6. समाज का अर्थ बताइए।
मैकाइवर और पेज के अनुसार, समाज, सामाजिक संबन्धों का एक जाल है (कोई अन्य परिभाषा)
 7. उद्विकास किसे कहते हैं ?
परिवर्तन जब धीरे – धीरे सरल से जटिल को ओर होता है तो उसे उद्विकास कहते हैं।
 8. पूँजीवाद की परिभाषा दीजिए।
आर्थिक उद्यम की एक व्याख्या, जो कि बाजार विनिय पर आधारित है। यह व्यवस्था उत्पादन के संसाधनों और सम्पत्तियों के निजि स्वामित्व पर आधारित है।
 9. उत्पादन के साधन से आप क्या समझते हैं ?

उत्पादन के साधन – वे साधन जिसके द्वारा समाज में भैतिक वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है। जिनमें व केवल तकनीक बल्कि उत्पादकों के परस्पर सम्बन्ध भी शामिल हैं।

10. पर्यावरण की प्रमुख समस्याएँ और जोखिम कौन – कौन से हैं ?
सेंसाधनों की क्षणिता (कमी) प्रदूषण, वैश्विक तापमान वृद्धि, प्राकृतिक तथा मानव निर्मित पर्यावरण विनाश।
11. ग्लोबल वार्मिंग से आप क्या समझते हैं ?
ग्लोबल वार्मिंग – विश्व के औसत तापमान (ग्रीन हाउस गैसों) में होने वाले वृद्धि ग्लोबल वार्मिंग कहलाती है।
12. समाजशास्त्र के अनुभव में कौन – से तीन क्रांतिकारी परिवर्तनों के हाथ हैं ?
ज्ञानोदय या वैज्ञानिकों क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति तथा औद्योगिक क्रांति।
13. भारत में सर्वप्रथम समाजशास्त्र का अध्ययन कब और कहाँ प्रारम्भ हुआ ?
1919ई. में मुम्बई विश्व विद्यालय में प्रारम्भ हुआ।
14. “यांत्रिक और “सावयवी” एकता में कोई दो अंतर लिखिए।

यांत्रिक एकता

1. श्रम विभाजन सरल होता है।
2. एकरूपता पर आधारित है
3. कम जनसंख्या वाले समाजों में पाई जाती है।
4. सामाजिक सम्बन्ध व्यक्तिगत होते हैं।

सावयवी एकता

1. श्रम विभाजन अत्यन्त जटिल होता है।
2. एकरूपता पर आधारित नहीं है
3. अधिक जनसंख्या वाले समाजों में पाई जाती है।
4. सामाजिक सम्बन्ध व्यक्तिगत होते अवैयक्तिक होते हैं।

15. संसाधनों की क्षीणता से सम्बंधित पर्यावरण के प्रमुख मुद्दे कौन से हैं ?
 1. पानी तथा भूमि में क्षीणता बहुत तेजी से आ रही है।
 2. नदियों के बहाव को भाड़े जाने के कारण जल बेसिन को शति पहुँची है। शहरी केन्द्रों की बढ़ती माँग के कारण।
 3. निर्माण कार्य होने के कारण प्राकृति निकासी के साधनों को नष्ट किया जा रहा है।
 4. भवन निर्माण के लिए मृदा का ऊपरी सतह का नाश।
 5. जैविक विविध – आवासों जैसे घास, जंगल समाप्ति के कगार पर खड़े हैं।
16. नौकरशाही की बुनियादी विशेषताएँ क्या हैं ? समझाइये।
डी. पी. मुकर्जी के अनुसार भारतीय समाजशास्त्री के क्या कर्तव्य हैं
 1. अधिकारियों के प्रकार्य (कार्य)
 2. पदों का सोपनिक क्रम

3. लिखित दस्तावेजों को विश्वसनीयता ।
4. कार्यालय का प्रबंधन ।
5. कार्यालय आचरण ।

अथवा

1. भारतीय समाजशास्त्री का प्रथम कर्तव्य – कि वह सामाजिक परम्पराओं के बारे में पढ़े तथा जाने ।
 2. एक भारतीय होना ।
 3. भाषा को सीखना ।
 4. संस्कृति की पहचान ।
17. नातेदारी क्या है ? समरक्त नातेदारी तथा वैवाहिक नातेदारी में अन्तर लिखिए ।
नातेदारी – ‘इस व्यवस्था में समाज द्वारा मान्यता प्राप्त वे सम्बन्ध आ जाते हैं जो कि अनुमति और वास्तविक वंशावली सम्बन्धों पर आधारित हैं ।

समरक्त नातेदारी

1. रक्त के माध्यम से बने नातेदारों को समरक्त नातेदार कहते हैं ।
2. जैसे – माता – पिता, भाई – बहन आदि ।

वैवाहिक नातेदारी

1. विवाह के माध्यम से बने नातेदारों को वैवाहिक नातेदारी कहते हैं ।
2. जैसे – सास, ससुर, देवर, जेठ आदि ।

18. जन परिवहन किस प्रकार नगरों में सामाजिक परिवर्तन ला सकते हैं ?
1. नगरों की आर्थिक स्थिति को प्रभावित करते हैं ।
 2. सामाजिक रूप को भी आकार प्रदान करते हैं ।
 3. नगरीकरण में तीव्र गति ।
 4. उदाहरण – दिल्ली की नारी मैट्रो रेल ने शहर के सामाजिक जीवन को बदल दिया है ।

19. धर्म क्या है ? सभी की समान विशेषताएँ क्या हैं ?

धर्म – पवित्र वस्तुओं से सम्बन्धित अनेक विश्वासों और व्यवहारों की एक ऐसी संगठित व्यवस्था है जो उन व्यक्तियों को एक नैतिक समुदाय की भावना में बाँधती है जो उसी प्रकार के विश्वासों और व्यवहारों को अभिव्यक्त करते हैं ।

विशेषताएँ

1. प्रतीकों का समुच्चय
2. श्रद्धा या सम्मान की भावनाएँ ।
3. अनुष्ठान सा समारोह ।
4. विश्वासकर्ताओं का एक समुदाय ।

20. प्रदूषण से आप क्या समझते हैं ? विभिन्न प्रकार के प्रदूषण केसय प्रकार हमें प्रभावित करते हैं ?
- प्रदूषण – विभिन्न कारणों से वातावरण कर का दूषित होना प्रदूषण कहलाता है।
- विभिन्न प्रकार के प्रदूषण**
1. वायु प्रदूषण – उदयोगों तथा वाहनों से विकलने वाली जहरीली गैसें तथा घरेलू उपाय के लिए लकड़ी तथा कोयले के प्रयोग से सेहत पर बुरा असर पड़ता है।
 2. जल प्रदूषण – घरेलू नालयों और फैक्ट्री से निकलनक वालक पदार्थों तथा जलशयों का प्रदूषण विशेष समस्या है।
 3. ध्वनि प्रदूषण – लाउडस्पीकर, राजनितिक प्रचार, वाहनों के हॉर्न और यातायात निर्माण उद्योग प्रभावित करते हैं।
21. संस्कृति के विभिन्न आयामों को समझाइये।
1. संज्ञानात्मक (व्याख्या सहित)
 2. मानकीय (व्याख्या सहित)
 3. भौतिक (व्याख्या सहित)
22. संघर्ष किसे कहते हैं ? संघर्ष के परिणामों की चर्चा कीजिए।
- संघर्ष – वह सामाजिक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या समूह अपने विरोधी को प्रत्यक्ष तौर पर हिंसा या कहंसा की चुनौति देकर अपने उद्देश्यों को पूर्ति करना चाहते हैं।
1. अनीति, धोखाघड़ी तथा भय का बोलबाला होता है।
 2. सांप्रदायिक दंगे भड़क सकते हैं।
 3. समाज की एकता में दरार आती है।
 4. सार्वजनिक को हित को ताक पर रख दिया जाता है।
- कोई अन्य बिन्दु**
23. परिवार के सम्बन्धों में परिवर्तन आने के क्या कारण हैं ? व्याख्या कीजिए।
1. औद्योगिकरण (व्याख्या सहित)
 2. स्त्रियों को आर्थिक निर्भरता (व्याख्या सहित)
 3. उच्च जीवन स्तर (व्याख्या सहित)
 4. नगरीकरण (व्याख्या सहित)
 5. व्यावसायिक मनोरंजन (व्याख्या सहित)
 6. युवावर्ग में क्रान्ति (व्याख्या सहित)
24. वेबर के अनुसार आदर्श प्रारूप क्यों है ?
- प्रारूप को ध्यान रखते हुए विभिन्न प्रकार की सत्ता को परिभाषित कीजिए।
- एम. एन श्री निवास को जीवन –परिचय एंव मुख्य उपलब्धियाँ लिखिए।
- आदर्श प्रारूप – यह सामाजिक घटना का तर्किक एकि स्थायी मंडल है जो

इसकी सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं को रेखांकित करता है।

आदर्श प्रारूप का प्रयोग तीन विभिन्न प्रकार की सत्ता को परिभाषित करने के लिए किया –

1. पारम्पारिक सत्ता (व्याख्या सहित)
2. करिशमाई सत्ता (व्याख्या सहित)
3. तर्क – संगत – वैधानिक सत्ता (व्याख्या सहित)

अथवा

1. जीवन परिचय (व्याख्या सहित)
2. उपलब्धियाँ (व्याख्या सहित)

25. नीचे दिए गए अवतरण को ध्यानपूर्वक पढ़े और प्रश्नों के उत्तर दें।

हम लड़के गलियों का प्रयोग अनेक वस्तुओं के लिए कहते हैं – एक स्थान की तरह, जहाँ खड़े होकर आप – पास देखे हैं, दौड़ने तथा खेलने के लिए हैं तथा खेलने के लिए, अपनी मोटरसाइकिलों पर विभिन्न करतब करने के लिए लड़कियों के लिए ऐसा नहीं है। जैसाकि हम हर समय देखते हैं, लड़कियों के लिए गलियाँ विद्यालय से सीधे जाने के लिए हैं तथा गली के इस सीमित प्रयोग के लिए वे सदा झुंड में जाती हैं, शायद इसके पीछे उनमें मौजुद छेड़खानी का भय है (कुमार 1986)

1. समाजीकरण से आप क्यार समझते हैं?
 2. समाजीकरण के विभिन्न अभिकरण हो?
 3. परिवार किस तरह लिंगवादी है?
1. सही उत्तर
 2. सही उत्तर
 3. सही उत्तर